औ़रतों के लिए

अल्लाह के ज़िक्र और क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल

हज़रत मौलाना आ़शिक़ इलाही साहिब बुलन्द शहरी रह.

मुसलमान औरतों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें

* औरतों के लिए *

अल्लाह के ज़िक्र और क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल

लेखक

हज़रत मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्द शहरी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद

देहली-110006

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब — अल्लाह के ज़िक्र और कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल

लेखक — मौलाना आ़शिक इलाही साहिब

हिन्दी अनुवाद — मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

तायदाद — 2100

प्रकाशन वर्ष — दिसम्बर 2003

कम्पोज़िंग — इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फरीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

विषय सूची

अल्लाह के ज़िक्र और कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल व मसाइल

कुरआन पढ़ना पढ़ाना और तिलावत में मशग़ूल रहना

हदीसः (1) हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम में से सबसे बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखाये।

(मिश्कात शरीफ़ पेज 183 जिल्द 1)

हदीसः (2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत के शरीफ़ लोग वे हैं जो कुरआन के उठाने वाले हैं और रात (को जागने) वाले हैं।

(मिश्कात शरीफ़ पेज 110 जिल्द 1)

तशरीहः इन दोनों हदीसों में कुरआन करीम के पढ़ने पढ़ाने और इसकी तालीम व प्रसार में लगने की फ़ज़ीलत बयान फ़रमायी है। दुनिया में करोड़ों आदमी बसते हैं, छोटा-बड़ा और अच्छा-बुरा और शरीफ़ वग़ैरह। शरीफ़ (सम्मानित और बड़ाई वाला) होने के बहुत-से मेयार हैं। इस बारे में लोगों की मुख़्तलिफ़ रायें हैं। कोई शख़्स दौलतमन्द (धनवान) को बड़ा समझता है, कोई राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री को शरीफ़ जानता है। कोई अच्छे बंगले में रहने वाले को अच्छा जानता है, कोई बड़ी फ़र्म और मोटर-कार वग़ैरह का मालिक होने को बड़ाई का मेयार यक़ीन करता है। ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन ज़िक्र हुए ख़्यालात को ग़लत क़रार

दिया और शराफ़त का मेयार कुरआन मजीद में मशग़ूल होना बताया। और जो इसकी तालीम में लगे उसके बारे में फ़रमाया कि वह **सबसे** बेहतर आदमी है।

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को कुरआन मेरे ज़िक्र से और मुझसे सवाल करने से मशग़ूल करे (कि उसको कुरआन शरीफ़ पढ़ने की वजह से दूसरे किसी ज़िक्र और दुआ की फ़ुरसत न मिले) मैं उसको सवाल करने वालों से अफ़ज़ल (नेमतें) दूँगा। और कलामुल्लाह की फ़ज़ीलत (दूसरे) सारे कलामों पर ऐसी है जैसी अल्लाह की फ़ज़ीलत मख़्लूक़ पर है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह की किताब से एक हर्फ़ पढ़े तो उसके लिये उस हर्फ़ के बदले एक नेकी मिलेगी और हर नेकी दस नेकियों के बराबर (लिखी जाती) है। (फिर फ़रमाया) मैं नहीं कहता कि **अलिफ़-लाम-मीम** एक हर्फ़ है, बल्कि मैं कहता हूँ कि **अलिफ़** एक हर्फ़ है और **लाम** एक हर्फ़ है और **मीम** एक हर्फ़ है। (तिर्मिज़ी)

पस अगर किसी ने लफ़्ज़ **अल्हम्दु** कहा तो उसके कहने से पचास नेकियाँ मिल जायेंगी क्योंकि इसमें पाँच हर्फ़ हैं।

कुरआन मजीद अल्लाह की किताब है इसमें अहकाम हैं। कायनात की हक़ीक़तें और इल्म व ज्ञान की बातें हैं, अख़्लाक़ व आदाब हैं, इसने दुनिया व आख़िरत की कामयाबी के आमाल बताये हैं, यह दुनिया के इन्क़िलाबात के असबाब और क़ौमों के उठने, पस्त होने, बुलन्दी हासिल करने और बरबाद होने के राज़ों और उसूलों की तरफ़

रहबरी करता है। इसकी बरकतें बेइन्तिहा हैं। ख़ुदा-ए-पाक की रहमतों का सरचश्मा (स्रोत) है, नेमत व दौलत का ख़ज़ाना है। इसकी तालीमात पर अ़मल करना दुनिया व आख़िरत की सरबुलन्दी और कामयाबी का ज़रिया है। इसके अलफ़ाज़ भी बहुत मुबारक हैं। यह सबसे बड़े बादशाह का कलाम है। ख़ालिक़ (पैदा करने वाले यानी ख़ुदा तआ़ला) व मालिक का प्याम है, जो उसने अपने बन्दों और बन्दियों के लिये भेजा है। इसके अलफ़ाज़ बहुत बरकत वाले हैं, इसकी तिलावत करने वाला आख़िरत के बेइन्तिहा अज्र व फल का हक़दार तो होता ही है दुनियावी ज़िन्दगी में भी रहमत व बरकत और इ़ज़्ज़त व ख़ुदाई मदद उसके साथ रहती है और यह शख़्स दिल के सुकून और ख़ुशहाली के साथ ज़िन्दगी गुज़ारता है।

कलामुल्लाह की एक अ़जीब शान यह है कि इसके पढ़ने से कभी सैरी नहीं होती (यानी तबीयत नहीं भरती) और बरसों पढ़ते रहो कभी पुराना मालूम नहीं होता। यानी तिलावत करने वाले की तबीयत का लगाव इस बुनियाद पर ख़त्म नहीं होता कि बार-बार एक ही चीज़ पढ़ रहा है बल्कि बात यह है कि जितनी बार पढ़ते हैं नयी चीज़ मालूम होती है। कितनी अ़ज़ीम है वह ज़ात जिसका कलाम इस क़द्र ख़ूबियों वाला है।

कुरआन मजीद की तिलावत और अल्लाह का ज़िक्र ज़बान पर जारी रखने से बहुत-से फ़ायदे हासिल होते हैं। एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु को चन्द वसीयतें फ़रमाईं जिनमें से एक यह है कि:

तर्जुमाः तुम कुरआन पाक की तिलावत और अल्लाह के ज़िक्र को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्योंकि इससे आसमान में तुम्हारा तज़किरा होगा और ज़मीन में तुम्हारे लिये नूर होगा। (मिश्कात शरीफ़)

आख़िरी मन्ज़िल पर

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन कुरआन वाले से कहा जायेगा कि पढ़ता जा और (जन्नत के दरजों में) चढ़ता जा। क्योंकि तेरी मन्ज़िल उस आयत के पास है जिसको तू सबसे आख़िर में पढ़े। (मिश्कात)

यानी चढ़ते-चढ़ते जहाँ तेरी क़िराअत (कुरआन का पढ़ना) ख़त्म होगी वहीं तेरी मन्ज़िल है। लिहाज़ा जिसको जितना कुरआन शरीफ़ याद होगा उतना ही उसको बुलन्द दरजा मिलेगा।

वीरान घर

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स के दिल में कुरआन का कुछ हिस्सा (भी) नहीं वह वीरान घर की तरह से है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदाः मालूम हुआ कि दिल एक इमारत है जिसकी आबादी कुरआन शरीफ़ से है।

क़ाबिले रश्क

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि रश्क सिर्फ़ दो आदमियों पर है- एक वह जिसको ख़ुदा ने कुरआन दिया वह उसमें रात-दिन लगा रहता है। नमाज़ों में पढ़ता है, तिलावत करता है उसपर अ़मल करता है। दूसरे वह जिसको ख़ुदा ने माल दिया हो सो वह उसमें से रात-दिन अल्लाह तआ़ला की रिज़ा में ख़र्च करता रहता है। (बुख़ारी शरीफ़)

औरतों को सूरः ब-क़रः की आख़िरी दो आयतें याद कराने का हुक्म

हदीसः (3) हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ऐसी दो आयतों पर सूरः ब-क़रः ख़त्म फ़रमायी है जो अल्लाह ने मुझे अपने उस ख़ज़ाने से दी हैं जो उसके अ़र्श के नीचे है लिहाज़ा तुम उन आयतों को सीखो और अपनी औ़रतों को सिखलाओ (ताकि वे भी तिलावत करें और उनके सीखने-सिखाने की ज़रूरत इसलिये है) कि ये रहमत (का ज़रिया) हैं और (अल्लाह की) नज़दीकी हासिल होने का सबब हैं और पूरी-की-पूरी दुआ़ हैं।

(मिश्कात शरीफ़ पेज 189)

तशरीहः इस रिवायत में सूरः ब-क़रः की आख़िरी दो आयतों की फ़ज़ीलत बयान फ़रमायी और हुक्म दिया है कि इनको सीखें और औ़रतों को भी सीखायें ताकि सभी इनकी बरकतों से मालामाल हों। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि सूरः ब्र-क़रः की आख़िरी दो आयतें (**आ-मनर्रसूलु** से लेकर सूरः के ख़त्म तक) अल्लाह ने मुझे अपने उस ख़ज़ाने से दी हैं जो उसके अ़र्श के नीचे है। और यह भी फ़रमाया कि ये दोनों आयतें रहमत का ज़रिया और अल्लाह की नज़दीकी हासिल होने का सबब हैं और पूरी की पूरी दुआ़ हैं। इन आयतों को याद करें बार-बार पढ़ें और ख़ुसूसियत के साथ सोते वक़्त ज़रूर पढ़ा करें। इनकी और फ़ज़ीलत अभी-अभी इन पन्नों में इन्शा-अल्लाह आयतुल-कुर्सी की फ़ज़ीलत के बाद बयान होगी।

औ़रतों को ज़िक्र व तिलावत में मर्दों से पीछे नहीं रहना चाहिये।

आख़िरत की दौड़-धूप में सब बराबर हैं, जो जितना कर लेगा उसका अज्र पा लेगा, मर्द हो या औरत हो। आख़िरत बेइन्तिहा है वहाँ की नेमतें भी बेइन्तिहा हैं, उम्रें भी बेइन्तिहा होंगी। नेमतों की नवाज़िश होगी, जो मर्द व औरत जिस क़द्र नेक आमाल की पूंजी साथ ले जायेगा वहाँ सवाब पायेगा।

सूरः ब-क़रः और सूरः आलि इमरान की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अपने घरों को क़ब्रें न बनाओ। (यानी घरों में ज़िक्र व तिलावत का चर्चा रखो और ज़िक्र व तिलावत से ख़ाली रखकर घरों को क़ब्रिस्तान न बना दो कि जैसे वहाँ ज़िक्र व तिलावत की आवाज़ नहीं ऐसे ही तुम्हारे घर भी इससे ख़ाली हो जायें और ज़िन्दा लोग मुर्दों की तरह बन जायें) फिर फ़रमाया कि बेशक शैतान उस घर से भागता है जिसमें सूरः ब-क़रः पढ़ी जाती है। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कुरआन पढ़ा करो क्योंकि वह क़ियामत के दिन अपने लोगों के लिये (जो पढ़ते-पढ़ाते हैं और इसकी तिलावत का ज़ौक़ रखते हैं) सिफ़ारिशी बनकर आयेगा। फिर फ़रमाया कि दो रोशन सूरतें पढ़ो (यानी सूरः ब-क़रः और सूरः आलि इमरान क्योंकि ये दोनों क़ियामत के दिन दो सायबानों की तरह आयेंगी और अपने लोगों को बख़्शवाने और दरजे बुलन्द कराने के लिये ख़ुदा पाक के हुज़ूर में) ख़ूब ज़ोरदार सिफ़ारिश करेंगी। फिर फ़रमाया कि सूरः ब-क़रः को पढ़ो क्योंकि इसका हासिल कर लेना बरकत का सबब है और इसका छोड़ देना हसरत का सबब है और यह बातिल वालों के बस की नहीं। (मुस्लिम शरीफ़)

आयतुल्-कुर्सी की फ़ज़ीलत

आयतुल्-कुर्सी भी सूरः ब-क़रः की एक आयत है जो तीसरे पारे के पहले पृष्ठ पर है। इसके पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत आयी है। एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उब्बी बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से दरियाफ़्त फ़रमाया कि बताओ अल्लाह की किताब में कौनसी आयत सबसे ज़्यादा बड़ी है? हज़रत उब्बी बिन कअ़ब ने अ़र्ज़ किया अल्लाह व रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। आपने फिर यही सवाल किया तो उन्होंने अ़र्ज़ किया कि सबसे बड़ी आयत यह है:

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ..............وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ

(सूरः ब-क़रः आयत 255)

यह सुनकर उनकी तसदीक़ फ़रमाते हुए आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके सीने पर हाथ मारकर फ़रमायाः तुमको इल्म मुबारक हो। (मुस्लिम शरीफ़)

बाज़ हदीसों में आयतुल-कुर्सी को कुरआन की तमाम आयतों की सरदार फ़रमाया है। (हिस्ने-हसीन)

एक हदीस में है कि जब तुम रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर जाओ तो आयतुल-कुर्सीः

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अल्-हय्युल् क़य्यूमु ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्-व ला नौम, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अु अ़िन्दहू इल्ला बिइज़्निही यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू-न बिशैइम्-मिन् इल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्-अर्-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल् अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम।

पढ़ लो। अगर ऐसा कर लोगे तो अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे

ऊपर एक निगरानी करने वाला मुक़र्रर हो जायेगा और तुम्हारे क़रीब शैतान न आयेगा। (बुख़ारी)

फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल-कुर्सी

फ़र्ज़ नमाज़ के बाद भी आयतुल-कुर्सी पढ़नी चाहिये। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि जो शख़्स हर (फ़र्ज़) नमाज़ के बाद आयतुल्-कुर्सी पढ़ ले उसको जन्नत में जाने के लिये मौत ही आड़ बनी हुई है। और जो शख़्स इस आयत को अपने बिस्तर पर लेटते वक़्त पढ़ ले तो अल्लाह उसके घर में और पड़ोसी के घर में और आस-पास के घरों में अमन रखेगा। (बैहक़ी)

शैतान के असर, आसेब, भूत-परेत से बचने के लिये आयतुल्-कुर्सी का पढ़ना आज़माया हुआ है।

सूरः ब-क़रः की आख़िरी दो आयतों की फ़ज़ीलत

सूरः ब-क़रः की आख़िरी दो आयतें (आ-मनर्रसूलु से लेकर सूरः के ख़त्म तक) इनके पढ़ने की भी बहुत फ़ज़ीलत है। आख़िरी आयत में दुआ़एँ हैं जो बहुत ज़रूरत की दुआ़एँ हैं। और इन दुआ़ओं के क़बूल होने का वायदा भी है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दिन फ़रमाया कि इस वक़्त आसमानों का एक दरवाज़ा खोला गया है जो इससे पहले कभी नहीं खोला गया था। उस दरवाज़े से एक फ़रिश्ता नाज़िल हुआ। आपने फ़रमाया कि यह एक फ़रिश्ता नाज़िल हुआ है जो आज से पहले ज़मीन की तरफ़ कभी नाज़िल नहीं हुआ। उस फ़रिश्ते ने आपको सलाम किया और कहाः आप ख़ुशख़बरी क़बूल फ़रमायें ऐसी दो चीज़ों की जो सरापा (यानी पूरी तरह) नूर हैं। आप से पहले किसी नबी को नहीं दी गईः (1) फ़ातिहतुल किताब (यानी

सूरः अल्हम्दु शरीफ़) (2) सूरः ब-क़रः की आख़िरी दो आयतें। (इन दोनों में दुआएँ हैं)। अल्लाह का यह वायदा है कि इनमें से दुआ का जो भी हिस्सा आप पढ़ेंगे उसके मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला आपको ज़रूर अ़ता फ़रमायेंगे। (मुस्लिम शरीफ़)

सूरः ब-क़रः की आख़िरी दो आयतें रात को पढ़ना

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने सूरः ब-क़रः की आख़िरी दो आयतें रात को पढ़ लीं तो ये आयतें उसके लिये काफ़ी होंगी। (यानी रात भर यह शख़्स जिन्नात और इनसानों की शरारतों से महफ़ूज़ रहेगा। हर नागवार चीज़ से इसकी हिफ़ाज़त होगी)।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत नौमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने दो आयतें नाज़िल फ़रमायी हैं जिन पर सूरः ब-क़रः ख़त्म की है। जिस किसी घर में तीन रात पढ़ी जायेंगी तो शैतान उस घर के क़रीब न आयेगा। (तिर्मिज़ी व दारमी)

एक हदीस में है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सूरः ब-क़रः के ख़त्म पर जो आयतें हैं अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत के ख़ज़ानों से दी हैं जो अ़र्श के नीचे हैं। (उनमें जो दुआएँ हैं ऐसी जामे और मुकम्मल हैं कि) उन्होंने दुनिया व आख़िरत की कोई भलाई नहीं छोड़ी जिसका सवाल उनमें न किया हो।

(मिश्कात शरीफ़)

जुमा के दिन सूरः आलि इमरान की तिलावत करना

हज़रत मकहोल ताबिई ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरः आलि

इमरान जुमा के दिन पढ़ ले उसके लिये रात आने तक फ़रिश्ते दुआ करते रहेंगे। (मिश्कात शरीफ़)

हर रात को सूरः वाक़िआ पढ़ने से कभी फ़ाक़ा न होगा

हदीसः (4) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना रात को सूरः वाक़िआ पढ़ लिया करे उसे कभी फ़ाक़ा न होगा। (हदीस को रिवायत करने वाले अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु के शार्गिद का बयान है कि) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी लड़कियों को हुक्म देकर रोज़ाना रात को सूरः वाक़िआ पढ़वाया करते थे।

(मिश्कात शरीफ़ पेज 189)

हदीसः हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपनी औ़रतों को सूरः वाक़िआ सिखाओ क्योंकि वह मालदारी (लाने) वाली सूरः है। (कन्ज़ुल्-उम्माल पेज 145 जिल्द 1)

तशरीहः हदीस नम्बर 93 में फ़रमाया कि जो शख़्स हर रात सूरः वाक़िआ पढ़ लिया करे उसे कभी फ़ाक़ा न होगा। और उसके बाद वाली हदीस में फ़रमाया कि सूरः वाक़िआ औ़रतों को सिखाओ क्योंकि यह मालदारी लाने वाली सूरः है, इसी लिए अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु रोज़ाना अपनी लड़कियों को पाबन्दी के साथ सूरः वाक़िआ पढ़वाया करते थे।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी तफ़सीर में इब्ने अ़साकिर रहमतुल्लाहि अ़लैहि के हवाले से लिखा है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मौत वाली बीमारी में

हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी बीमार-पुरसी के लिए तशरीफ़ ले गये और दरियाफ़्त फ़रमाया कि आपको क्या तकलीफ़ है? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया अपने गुनाहों के वबाल की तकलीफ़ है। हज़रत उसमान रज़ि० ने फ़रमाया आपकी ख़्वाहिश क्या है? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अपने परवर्दिगार की रहमत चाहता हूँ। आपके लिये कोई डाक्टर भेज दूँ? हज़रत उसमान ने पूछा। डाक्टर ने ही तो मुझे बीमार किया है, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया। तो फिर आख़िर ख़र्चों के लिये कुछ रक़म भिजवा दूँ? हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। नहीं! मुझे इसकी ज़रूरत नहीं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया। यह रक़म आपके बाद आपकी लड़कियों के काम आ जायेगी, हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। क्या आपको मेरी बेटियों पर फ़ाक़े व तंगदस्ती का अन्देशा है? मैंने तो उन्हें हर रात सूरः वाक़िआ की तिलावत की ताकीद कर रखी है, क्योंकि मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स हर रात सूरः वाक़िआ पढ़े उसे कभी फ़ाक़े की मुसीबत नहीं आयेगी। (तफ़सीर इब्ने कसीर पेज 281 जिल्द 4)

लोग आजकल पैसा कमाने और मालदार बनने के लिये बहुत कुछ कोशिशें करते हैं लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताये हुए नुस्ख़े पर अमल करने का इरादा ही नहीं करते। आजकल हम ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं कि मर्दों और औरतों को, छोटों बड़ों को, बच्चों और बूढ़ों को कुरआन मजीद की तिलावत करने और अल्लाह का ज़िक्र करने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती। सुबह होती है तो सबसे पहले रेडियो और अख़बारात में मशग़ूल हो जाते हैं। घण्टे आधे घण्टे के बाद नाश्ता करके बनाव सिंघार करके बच्चे स्कूल की राह

लेते हैं और बड़े नौकरियों के लिये चल देते हैं। औरतें और छोटे बच्चे रेडियो से गाना-बजाना सुनते रहते हैं। जब स्कूल वाले बच्चे वापस आते हैं तो वे भी गाना सुनने में लग जाते हैं, कहाँ का ज़िक्र कहाँ की तिलावत, सब दुनिया की मुहब्बत में मस्त रहते हैं। बहुत कम किसी घर से कलामुल्लाह पढ़ने की आवाज़ आती है। अल्लाह के ज़िक्र और कुरआन पाक की तिलावत के लिये लोगों की तबीयतें आमादा ही नहीं। मौहल्ले के मौहल्ले ग़फ़लत-कदे बने हुए हैं, इक्का-दुक्का किसी घर में कोई नमाज़ी है और इस अफ़सोसनाक माहौल की वजह से अल्लाह की रहमतों और बरकतों से मेहरूम हैं।

हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि कुरआन मजीद पढ़े और अपने हर बच्चे को लड़का हो या लड़की कुरआन शरीफ़ पढ़ाये और रोज़ाना सुबह उठकर नमाज़ से फ़ारिग़ होकर घर का हर फ़र्द कुछ न कुछ तिलावत ज़रूर करे ताकि उसकी बरकत से ज़ाहिर व बातिन दुरुस्त हो और दुनिया व आख़िरत की ख़ैर नसीब हो।

अल्लाह के ज़िक्र और तिलावते कुरआन मजीद की बरकतें और सआदतें ऐसी बेइन्तिहा हैं जिनका पता उन्हीं नेक बन्दों को है जो अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा उनमें लगाये रहते हैं।

सूरः वाक़िआ और सूरः आलि इमरान और सूरः ब-क़रः के फ़ज़ाइल अभी-अभी गुज़र चुके हैं। तरग़ीब के लिये इनके अ़लावा दीगर सूरतों के ख़ास-ख़ास फ़ज़ाइल और ख़ासियतें ज़िक्र की जाती हैं ताकि नफ़्स को तिलावत के लिये आमादा करना आसान हो।

सूरः फ़ातिहा

सूरः फ़ातिहा कुरआन मजीद की पहली सूरः है जो बहुत बड़ी फ़ज़ीलत वाली सूरः है। एक हदीस में इसको कुरआन की सबसे बड़ी सूरः फ़रमाया है। (बुख़ारी) लम्बी सूरतें तो और भी हैं मगर बड़ाई के

एतिबार से यह सबसे बड़ी है, इसकी बहुत बरकत है। नमाज़ की हर रकअ़त में पढ़ी जाती है। एक हदीस में फ़रमाया कि सूरः फ़ातिहा जैसी सूरः न तो तौरात में नाज़िल हुई न इन्जील में, न ज़बूर में न कुरआन में। (तिर्मिज़ी)

सूरः फ़ातिहा का विर्द रखना, दुनिया व आख़िरत की भलाइयों से नवाज़े जाने का बहुत बड़ा ज़रिया है। एक हदीस में इरशाद है कि सूरः फ़ातिहा में हर मर्ज़ से शिफ़ा है। (दारमी) सूरः फ़ातिहा के दस नाम हैं जिनमें से एक नाम काफ़िया और दूसरा शाफ़िया है, इसको पढ़ती रहा करो, बच्चों को सिखाओ और पढ़ो और पढ़ाओ।

सूरः यासीन की फज़ीलत

हज़रत अ़ता बिन अबी रिबाह (ताबिई) फ़रमाते हैं कि मुझे यह हदीस पहुँची है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने दिन के अव्वल हिस्से में सूरः यासीन शरीफ़ पढ़ ली उसकी हाजतें पूरी कर दी जायेंगी। (मिश्कात शरीफ़)

एक और हदीस में है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने सूरः यासीन अल्लाह की रिज़ा की नीयत से पढ़ी उसके पिछले गुनाह माफ़ हो जायेंगे लिहाज़ा तुम इसे अपने मुर्दों के पास पढ़ा करो। (मिश्कात शरीफ़) यानी जिसकी मौत का वक़्त क़रीब हो उसके पास बैठकर पढ़ो।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हर चीज़ का दिल होता है और कुरआन का दिल सूरः यासीन है। जिसने यासीन (एक बार) पढ़ी, अल्लाह उसके पढ़ने की वजह से उसके लिये दस बार पूरा कुरआन शरीफ़ पढ़ने का सवाब लिख देगा। (मिश्कात शरीफ़)

सूरः कह्फ़ की फ़ज़ीलत

सूरः कह्फ़ पन्द्रहवें पारे के आधे **अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी** से शुरू होती है। इस सूरः के पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत बयान हुई है। हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने जुमा के दिन सूरः कह्फ़ पढ़ ली उसके लिये दोनों जुमों के दरमियान नूर रोशन रहेगा। (दअ़वाते कबीर) यानी उसका दिल नूर से भरा रहेगा। या यह मतलब है कि जुमा के दिन एक बार के पढ़ लेने से उसकी क़ब्र में बक़द्र एक हफ़्ते के रोशनी रहेगी। अगर कोई हर जुमा को पढ़ लिया करे तो उसे मौत के बाद भी नूर ही नूर नसीब होगा। (अगरचे तमाम नेक आमाल रोशनी का सबब हैं)।

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने सूरः कह्फ़ के अव्वल की तीन आयतें पढ़ लीं वह दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ रहेगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः तबारकल्लज़ी और अलिफ़-लाम-मीम सज्दः की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि कुरआन शरीफ़ में एक सूरः है जिसमें तीस आयतें हैं। उसने एक शख़्स की यहाँ तक सिफ़ारिश की कि वह बख़्श दिया गया। यह सूरः तबारकल्लज़ी बियदिहिल् मुल्कु है (जो उन्तीसवें पारे की पहली सूरः है)। (तिर्मिज़ी, निसाई)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को उस वक़्त तक नहीं सोते थे जब

तक कि सूरः **अलिफ़-लाम-मीम सज्दा** और सूरः **तबारकल्लज़ी बियदिहिल् मुल्कु** न पढ़ लेते थे। (तिर्मिज़ी, दारमी)

क़ब्र के अज़ाब से बचाने वाली दो सूरतें

सूरः सज्दा इक्कीसवें पारे में है जिसे अलिफ़-लाम-मीम सज्दा भी कहते हैं। यह सूरः लुक़मान और सूरः अहज़ाब के दरमियान है। सूरः तबारकल्लज़ी और सूरः सज्दा को क़ब्र के अज़ाब से बचाने में ख़ास दख़ल है जैसा कि चुग़ली और पेशाब की छींटों से एहतियात न करने को क़ब्र का अज़ाब लाने में ज़्यादा दख़ल है।

हज़रत ख़ालिद बिन मअ़दान (ताबिई) ने फ़रमाया कि मुझे यह बात मालूम हुई है कि एक शख़्स सूरः अलिफ़ लाम मीम सज्दा को पढ़ा करता था इसके सिवा (बतौर विर्द) कोई दूसरी सूरः न पढ़ता था और था भी बहुत गुनाहगार, जब क़ब्र में अज़ाब होने लगा तो इस सूरः ने उस शख़्स पर अपने पर फैला दिये और अ़र्ज़ किया कि ऐ रब! इसकी मग़फ़िरत फ़रमा दे क्योंकि यह मुझे ज़्यादा पढ़ा करता था। चुनाँचे ख़ुदा तआ़ला ने उसकी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमाई और फ़रमाया कि इसके लिये हर गुनाह के बदले एक-एक नेकी लिख दो और एक-एक दरजा बुलन्द कर दो। उन्होंने यह भी फ़रमाया कि यह सूरः अपने पढ़ने वाले की जानिब से क़ब्र में झगड़ा करेगी और अल्लाह पाक से अ़र्ज़ करेगी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तेरी किताब से हूँ तो इसके बारे में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा, अगर मैं तेरी किताब से नहीं हूँ तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। यह भी फ़रमाया कि यह सूरः परिन्दे की तरह अपने पर फैला देगी और सिफ़ारिश करेगी और क़ब्र के अ़ज़ाब से बचा देगी। जो-जो फ़ज़ीलत सूरः अलिफ़ लाम मीम सज्दा की बतायी यह फ़ज़ीलत और ख़ुसूसियत सूरः तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु की भी बतायी है। (मिश्कात शरीफ़)

एक हदीस में है कि एक सहाबी ने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया उन्हें पता न था कि यहाँ क़ब्र है, वहाँ से उनको सूरः तबारकल्लज़ी बियदिहिल् मुल्कु पढ़ने की आवाज़ आयी। पढ़ने वाले ने जो क़ब्र वाला था यह सूरः पढ़ते-पढ़ते ख़त्म कर दी, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह वाक़िआ अ़र्ज़ किया तो आपने फ़रमाया कि "यह सूरः अ़ज़ाब को रोकने वाली है, अल्लाह के अ़ज़ाब से उसे नजात दिला देगी।" (तिर्मिज़ी)

सूरः हश्र की आख़िरी तीन आयतें

हज़रत मअ़क़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह को तीन बारः

अऊज़ु बिल्लाहिस्समीअ़िल् अ़लीमि मिनश्शैतानिर्रजीमि

पढ़कर सूरः हश्र की आख़िरी तीन आयतें पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देंगे जो उस दिन शाम तक उसके लिये रहमत की दुआ़ करते हैं। और अगर उस दिन में मर जायेगा तो शहीद होने का दरजा पायेगा। और जिसने यह अ़मल शाम को कर लिया तो उसको भी यही नफ़ा होगा (यानी सुबह होने तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उसके लिये रहमत की दुआ़ करते रहेंगे और उस रात में मर जायेगा तो) शहादत का दरजा पायेगा। (तिर्मिज़ी व दारमी)

सूरः हश्र अट्ठाईसवें पारे में है, उसकी आख़िरी तीन आयतें: **हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व** से सूरः के ख़त्म तक हैं, तलाश करके निकाल लो, समझ में न आये तो किसी हाफ़िज़ से पूछ लो।

सूरः इज़ा ज़ुलज़िलत्, कुल या अय्युहल् काफ़िरून और सूरः इख़्लास

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि सूरः इज़ा ज़ुलज़िलतिल् अर्ज़ु आधे कुरआन के बराबर है, और सूरः कुल हुवल्लाहु अहद् तिहाई कुरआन के बराबर है, और सूरः कुल या अय्युहल् काफ़िरून चौथाई कुरआन के बराबर है। (तिर्मिज़ी)

सूरः इख़्लास की अतिरिक्त फ़ज़ीलत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि जिसने रोज़ाना दो सौ बार सूरः कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ ली उसके पचास साल के (छोटे) गुनाह आमालनामे से मिटा दिये जायेंगे। हाँ! अगर उसके ऊपर किसी का क़र्ज़ हो तो वह तो माफ़ न होगा। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ही ने हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० का यह इरशाद नक़ल किया है कि जो शख़्स बिस्तर पर जाने का इरादा करे और दाहिनी करवट पर लेटकर सौ बार कुल हुवल्लाहु अहद् पढ़ ले तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला का इरशाद होगा के ऐ मेरे बन्दे! तू अपनी दाईं तरफ़ से जन्नत में दाख़िल हो जा। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स को सूरः कुल हुवल्लाहु अहद् पढ़ते हुए सुन लिया। आपने फ़रमाया (इसके लिये) वाजिब हो गयी। मैंने पूछा क्या? फ़रमायाः जन्नत। (तिर्मिज़ी)

एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं सूरः कुल हुवल्लाहु अहद् से मुहब्बत रखता हूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

फ़रमाया इसकी मुहब्बत ने तुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया। (तिर्मिज़ी)

हज़रत सईद बिन मुसैयब से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने दस बार सूरः कुल हुवल्लाहु अहद् पढ़ ली उसके लिये जन्नत में एक महल बना दिया जायेगा, और जिसने बीस बार पढ़ ली उसके लिये जन्नत में दो महल बना दिये जायेंगे, और जिसने तीस बार पढ़ ली उसके लिये जन्नत में तीन महल बना दिये जायेंगे। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम! इस सूरत में तो हम अपने बहुत ज़्यादा महल बना लेंगे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह बहुत बड़ा दाता है जितना अ़मल कर लोगे उसके पास से बहुत ज़्यादा इनाम है। (दारमी)

सूरः अल्हाकुमुत्तकासुर

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने सहाबा से फ़रमाया कि क्या तुम से यह नहीं हो सकता कि रोज़ाना हज़ार आयतें पढ़ लो। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! किसे ताक़त है कि रोज़ाना हज़ार आयतें (पाबन्दी से बिला नाग़ा) पढ़े। आपने फ़रमाया कि क्या तुम से यह नहीं हो सकता कि **सूरः अल्हाकुमुत्तकासुर** पढ़ लो। (शुअ़बुल् ईमान)

कुल अऊज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ और कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास

ये सूरतें कुरआन पाक की आख़िरी दो सूरतें हैं। इनको मुअ़व्वज़तैन कहते हैं। इनकी बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। तकलीफ़ देने वाली चीज़ों और मख़्लूक़ की शरारतों से महफ़ूज़ रहने के लिये इनका पढ़ना बहुत ही ज़्यादा लाभदायक और मुफ़ीद है। हज़रत उक़बा बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैं सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम के साथ सफ़र में था कि अचानक आँधी आ गयी और सख़्त अन्धेरा हो गया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ और कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास के ज़रिये उस मुसीबत से अल्लाह की पनाह माँगने लगे, यानी इनको पढ़ने लगे और फ़रमाया कि उक़बा! इन सूरतों के ज़रिये अल्लाह की पनाह हासिल करो क्योंकि इन जैसी और कोई चीज़ नहीं है जिसके ज़रिये कोई पनाह वाला पनाह हासिल करे। (अबू दाऊद)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ख़बीब फ़रमाते हैं कि एक बार हम ऐसी रात में जिसमें बारिश हो रही थी और सख़्त आँधी भी थी, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तलाश करने के लिये निकले, चुनाँचे हमने आपको पा लिया। आपने फ़रमाया कहो, मैंने अ़र्ज़ किया, क्या कहूँ? फ़रमाया जब सुबह हो और शाम हो सूरः कुल हुवल्लाहु अहद् और सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ और सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास तीन-तीन बार पढ़ लो, यह अ़मल कर लोगे तो हर ऐसी चीज़ से तुम्हारी हिफ़ाज़त होगी जिससे पनाह ली जाती है। (यानी हर तकलीफ़ देने वाली और हर बुराई और हर बला से महफ़ूज़ हो जाओगे)। (तिर्मिज़ी)

बात यह है कि जब कोई शख़्स सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ पढ़ता है तो हर उस चीज़ के शर से अल्लाह की पनाह लेता है जो अल्लाह ने पैदा की है। और रात के शर से भी पनाह लेता है और गिरहों में दम करने वाली औ़रतों से शर से भी पनाह लेता है जो जादू करती हैं, और हसद करने वाले के शर से भी पनाह लेता है। और कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास पढ़ने वाला सीनों में वस्वसे डालने वाले के शर से पनाह लेता है। इतनी चीज़ों के शर (बुराई और फ़ितने) से बचने के लिये दुआ़ की जाती है इसी लिये ये दोनों सूरतें हर तरह के

शर से और बला और मुसीबत और जादू-टोने टोटके से महफ़ूज़ रहने के लिये मुफ़ीद हैं और आज़माई हुई हैं। इनको और सूरः इख़्लास को सुबह शाम तीन-तीन बार पढ़े और दूसरे वक़्तों में भी विर्द रखे। किसी बच्चे को तकलीफ़ हो, नज़र लग जाये तो इन दोनों को पढ़कर दम करे या इनको लिखकर गले में डाल दे। बच्चों को याद करा दें, दुख-तकलीफ़ में उनसे भी पढ़वाएँ।

रात को सोते वक़्त करने का एक अ़मल

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि रोज़ाना रात को जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो सूरः कुल हुवल्लाहु अहद् और सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ और सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास पढ़कर हाथ की दोनों हथेलियों को मिलाकर उनमें इस तरह फूँक मारते थे कि कुछ थूक भी फूँक के साथ निकल जाता था। फिर दोनों हथेलियों को पूरे बदन पर जहाँ तक मुमकिन होता था फैर लेते थे। यह हाथ फैरना सर और चेहरे से और सामने के हिस्से से शुरू फ़रमाते थे और यह अ़मल तीन बार फ़रमाते थे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

बीमारी का एक अ़मल

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लहु अ़न्हा ही यह भी फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० को जब कोई तकलीफ़ होती थी तो अपने जिस्म मुबारक पर सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ और सूरः कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास पढ़कर दम किया करते थे। (जिसका तरीक़ा अभी ऊपर गुज़रा है) फिर जिस बीमारी में आपकी वफ़ात हुई उसमें मैं यह करती थी कि दोनों सूरः पढ़कर आपके हाथ पर दम कर देती थी फिर आपके हाथ को आपके जिस्म मुबारक पर फैर देती थी। (बुख़ारी व मुस्लिम)

दम सिर्फ फूँकने को नहीं कहते, दम यह है कि फूँक के साथ थूक का भी कुछ हिस्सा निकल जाये।

कुरआन के हिफ़्ज़ करने की ज़रूरत और अहमियत

कुरआन मजीद बहुत बड़ा मोजिज़ा (चमत्कार) है और कई एतिबार से माजिज़ा है। इसका एक खुला हुआ मोजिज़ा जो हर मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम के और हर दोस्त व दुश्मन के सामने है, यह है कि छोटे-छोटे बच्चे और जवान और बड़ी उम्रों के लोग इसको हिफ़्ज़ याद कर लेते हैं। कुरआन का हाफ़िज़ होना अच्छा ज़ेहन और ताक़तवर दिमाग़ होने पर मौकूफ़ नहीं, बड़े-बड़े ज़हीन और हाफ़ज़े की कुव्वत रखने वाले अपनी ज़बान में लिखी हुई किताब के पचास पृष्ठ भी याद नहीं कर सकते और रोज़ाना थोड़ा-सा वक़्त निकालने से कुरआन मजीद कम ज़ेहन वालों को भी याद हो जाता है जो अपनी ज़बान में भी नहीं है। जब तक अल्लाह तआला को मन्ज़ूर है कि कुरआन दुनिया में रहे इसके हिफ़्ज़ करने वाले भी रहेंगे। जो शख़्स या जो कुंबा और जो बिरादरी और जो इलाक़ा इसकी तरफ़ से ग़फ़लत बरतेगा ख़ुद इसकी ख़ैर से मेहरूम ही रहेगा। कुरआन के याद रखने वाले मौजूद रहे हैं और मौजूद रहेंगे इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

हमें चाहिये कि कुरआन की तरफ़ बढ़ें ताकि उसकी बरकतों से मालामाल हों। अपनी औलाद को कुरआन मजीद हिफ़्ज़ कराने की बहुत ही ज़्यादा कोशिश करें।

हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने कुरआन शरीफ पढ़ा और उसको ख़ूब याद कर लिया और उसके हलाल को हलाल रखा और उसके हराम को हराम रखा तो

ख़ुदा तआ़ला उसको जन्नत में दाख़िल कर देगा और उसके घर वालों में से दस ऐसे लोगों के बारे में उसकी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमायेगा जिनके लिये दोज़ख़ में जाना वाजिब हो चुका होगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हलाल को हलाल रखा और हराम को हराम रखा, इसका मतलब यह है कि कुरआन ने जिन चीज़ों को हलाल बताया है उनको हलाल समझकर उनपर अ़मल किया और जिन चीज़ों को हराम किया है उनको हराम समझकर छोड़ दिया, कुरआन के अहकाम का उल्लंघन नहीं किया।

हज़रत मुआ़ज़ जुहनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने कुरआन पढ़ा और उसपर अ़मल किया क़ियामत के दिन उसके माँ-बाप को ऐसा ताज पहनाया जायेगा जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से भी बेहतर होगी जबकि सूरज दुनिया के घरों में हो। यह फ़रमाकर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "जब माँ-बाप के सम्मान और इकराम का यह हाल है तो अब तुम्हारा क्या ख़्याल है उसके बारे में जिसने यह काम किया यानी कुरआन पढ़ा, उसपर अ़मल किया)। (अबू दाऊद शरीफ़)

यानी उसका इनाम तो और भी ज़्यादा होगा।

अपने बच्चों को कुरआन के हिफ़्ज़ में लगाओ यह बहुत आसान काम है, जाहिलों ने मशहूर कर दिया है कि कुरआन हिफ़्ज़ करना लोहे के चने चबाने के बराबर है, यह बिल्कुल जाहिलाना बात है। कुरआन हाफ़्ज़े से याद नहीं होता मोजिज़ा होने की वजह से याद होता है। हमने कितनी ही बार तजुर्बा किया है कि दुनिया के काम-काज करते हुए और स्कूल व कालिज में पढ़ते हुए बहुत-से बच्चों ने कुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ कर लिया। बहुत-से लोगों ने सफ़ेद बाल होने के बाद

हिफ़्ज़ करना शुरू किया, अल्लाह ने उनको भी कामयाबी अ़ता की।

जो बच्चा हिफ़्ज़ कर लेता है उसकी यादगारी की कुव्वत और समझ में बहुत ज़्यादा इज़ाफ़ा हो जाता है और वह आईन्दा जो भी तालीम हासिल करे हमेशा अपने साथियों से आगे रहता है। कुरआन की बरकत से इनसान दुनिया व आख़िरत में तरक़्क़ी करता है कि लोगों ने कुरआन को समझा ही नहीं कोई कुरआन की तरफ़ बढ़े तो उसकी बरकत का पता चले।

बहुत-से जाहिल कहते हैं कि तोते की तरह रटने से क्या फ़ायदा? ये लोग रुपये-पैसे को फ़ायदा समझते हैं। हर हर्फ़ पर दस नेकियाँ मिलना और आख़िरत में माँ-बाप को ताज पहनाया जाना और कुरआन पढ़ने वाले का अपने घर के लोगों की सिफ़ारिश करके दोज़ख़ से बचवा देना फ़ायदे में शुमार ही नहीं करते। कहते हैं कि हिफ़्ज़ करके मुल्ला बनेगा तो कहाँ से खायेगा। मैं कहता हूँ कि हिफ़्ज़ करने के बाद तिजारत और नौकरी कर लेने से कौन रोकता है, मुल्ला हो तो बहुत बड़ी सआ़दत है, जिसे यह सआ़दत नहीं चाहिए वह अपने बच्चों को कुरआन के हिफ़्ज़ से तो मेहरूम न करे। जब हिफ़्ज़ कर ले तो उसे दुनिया के किसी भी हलाल मशग़ले में लगा दे। और यह बात भी मालूम होनी चाहिये कि जितने साल में यह बच्चा हिफ़्ज़ करेगा उसके ये साल दुनियावी तालीम के एतिबार से ज़ाया न होंगे क्योंकि हिफ़्ज़ कर लेने वाला हिफ़्ज़ से फ़ारिग़ होकर चन्द महीने की मेहनत से छठी-सातवीं जमाअ़त का इम्तिहान आसानी से दे सकता है। यह सिर्फ़ दावा नहीं तजुर्बा किया गया है।

अल्लाह के ज़िक्र के फ़ज़ाइल और उससे ग़फ़लत पर वईदें

तसबीह पढ़ने और कलिमा तय्यिबा का विर्द करने का हुक्म और उंगलियों पर पढ़ने की फ़ज़ीलत

हदीसः (5) हज़रत युसैरा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान फ़रमाती हैं (जो उन मुक़द्दस औरतों में से हैं जिन्होंने राहे ख़ुदा में हिजरत की थी) कि दोनों जहान के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम (चन्द औरतों) से ख़िताब करके फ़रमाया कि तुम **तसबीह** व **तहलील** (यानी ला इला-ह इल्लल्लाह कहना) और **तक़दीस** (यानी अल्लाह की पाकी बयान करने) की पाबन्दी रखो और उंगलियों पर पढ़ा करो क्योंकि इनसे पूछा जायेगा (और जवाब देने के लिये) इनको बोलने की ताक़त दी जायेगी और तुम (अल्लाह के ज़िक्र से) ग़ाफ़िल न हो जाना वरना रहमत से भुला दी जाओगी। (मिश्कात शरीफ़ पेज 202)

तशरीहः आक़ा-ए-दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम मर्दों और औरतों के लिये नबी बनाकर भेजे गये और आप क़ियामत तक पैदा होने वाले तमाम इनसानों के लिये सुधारक और रहनुमाई करने वाले हैं अगरचे उमूमन शरई अहकाम कुरआन व हदीस में उमूमी ख़िताब से ज़िक्र किये गये हैं जिसमें 'मुज़क्कर के सीग़े' (इस्तेमाल किये गये हैं और सिवाए ख़ास अहकाम के सब अहकाम मर्दों और औरतों के लिये बराबर हैं बावजूद यह कि उमूमी ख़िताब में औरतें भी बराबर की शरीक हैं फिर भी कुरआन व हदीस में जगह-जगह औरतों को ख़ुसूसी ख़िताब से सम्मान बख़्शा गया है। ऊपर ज़िक्र हुई हदीस भी

इस सिलसिले की एक कड़ी है।

अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल रहना हर मुस्लिम मर्द व औरत के लिये गुनाहों की मग़फ़िरत और दरजों के बुलन्द होने का सबब है और बेशुमार आयतों व हदीसों में ज़िक्र की तरग़ीब दी गयी है। इस हदीस में ख़ासकर औरतों से ख़िताब फ़रमाया है और इस ख़ुसूसी ख़िताब की वजह ग़ालिबन यह है कि औरतों में तेरी-मेरी बुराई करने और लगाई-बुझाई के ज़रिये फ़साद फैलाने की ख़ास आदत होती है। औरतों की शायद कोई मजलिस शिकवा-शिकायत और ग़ीबत व बोहतान से ख़ाली होती हो। ज़बान ख़ुदा पाक का बहुत बड़ा इनाम और उसकी अ़ता है इसके ज़रिये जन्नत के बुलन्द दरजों तक रसाई हो सकती है। इस मुबारक बख़्शिश और इनाम को बे-मक़सद बातों और नेकियाँ बरबाद करने वाली गुफ़्तगू में लगाना पूरी तरह नुक़सान और बहुत बड़ा घाटा है। एक हदीस में इरशाद है:

हदीसः अल्लाह के ज़िक्र के बग़ैर ज़्यादा न बोला करो, क्योंकि ज़िक्रे इलाही के बग़ैर ज़्यादा बोलने से दिल सख़्त हो जाता है और यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला से सबसे ज़्यादा दूर वही शख़्स है जिसका दिल सख़्त हो। (तिर्मिज़ी)

औरतें ज़बान के मामले में बहुत ज़्यादा बे-एहतियात होती हैं, उनको ख़ुसूसी ख़िताब फ़रमाया किः

(1) **तसबीह** (सुब्हानल्लाह कहना, अल्लाह का ज़िक्र करना) व **तहलील** (ला इला-ह इल्लल्लाहु कहना) और **तक़दीस** (अल्लाह की पाकी बयान करने) में लगी रहा करो। तसबीह **सुब्हानल्लाह** कहने को और तहलील **ला इला-ह इल्ललाहु** कहने को कहते हैं। इन दोनों के बड़े-बड़े अज्र व सवाब हदीसों में बयन हुए हैं। तक़दीस ख़ुदा-ए-पाक की पाकी बयान करने को कहते हैं। क़ुद्दूस अल्लाह तआ़ला के पाक

नामों में से है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वित्रों का सलाम फेरकर तीन बार **सुब्हानल् मलिकिल् क़ुद्दूस** कहा करते थे। और तीसरी बार आवाज़ बुलन्द फ़रमाते थे। **अल्-क़ुद्दूस** की **दाल** को ज़रा ज़्यादा खींचते थे। जब तहज्जुद के लिये जागते थे तो दस बार **अल्लाहु अकबर** और दस बार **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही** और दस बार **अस्तग़फ़िरुल्ला-ह** और दस बार **ला इला-ह इल्लल्लाहु** और दस बार **सुब्हानल्-मलिकिल् क़ुद्दूसि** पढ़ा करते थे।

(2) दूसरी नसीहत यह फ़रमायी कि अल्लाह का ज़िक्र करते वक़्त उंगलियों पर गिना करो। फिर इसकी हिकमत बतायी कि क़ियामत के दिन उंगलियों को बोलने की ताक़त दी जायेगी और इनसे सवाल होगा। जिसने इनको अल्लाह के ज़िक्र के लिये इस्तेमाल किया होगा उसके हक़ में गवाही देंगी। दूसरी हदीसों और बाज़ क़ुरआनी आयतों से मालूम होता है कि उंगलियों के अलावा दूसरे जिस्मानी अंग (हाथ पाँव रान वग़ैरह) भी गवाही देंगे। इनसान की समझदारी इसी में है कि अपने जिस्मानी अंगों को अपने हक़ में अच्छे गवाह बनाये, यानी नेक आमाल में मशग़ूल हो और बुरे आमाल से बचे ताकि उसके अपने हाथ-पाँव उसके ख़िलाफ़ गवाही न दे सकें।

(3) तीसरी नसीहत यह फ़रमायी कि अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न होना चाहिये वरना रहमत से भुला दी जाओगी, यानी अल्लाह तआला की ख़ुसूसी रहमतों और बरकतों से मेहरूम हो जाओगी।

दर हक़ीक़त यह नसीहत पहली ही नसीहत की ताकीद है और दोबारा इसमें अल्लाह के ज़िक्र की तरग़ीब दी गयी है। अल्लाह का ज़िक्र बड़ी अनमोल नेमत है और आख़िरत के बड़े दरजे इसके ज़रिये मिल सकते हैं और इसमें ख़र्च भी कुछ नहीं होता। काम-काज में लगे हुए भी पहला कलिमा, तीसरा कलिमा, दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार

वग़ैरह में मशग़ूल रह सकती हैं, वुज़ू के साथ होना भी शर्त नहीं बल्कि अगर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो या ख़ास दिनों का ज़माना हो तब भी अल्लाह का ज़िक्र कर सकती हैं। हाँ! इन दोनों हालतों में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने की इजाज़त नहीं है।

ज़िक्र के फ़ज़ाइल ज़रा तफ़सील से लिखे जाते हैं ताकि ज़िक्र के अज्र व सवाब और इसके ज़बरदस्त नफ़े का पता रहे और अ़मल की तरफ़ दिल बढ़े।

ज़िक्र करने वाले हर भलाई ले गये

एक शख़्स ने सवाल किया या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) कौनसे मुजाहिद का बड़ा अज्र है? आपने फ़रमाया जो उनमें से ख़ुदा तआ़ला को बहुत याद करता हो। फिर उन साहिब ने दरियाफ़्त किया कि नेक लोगों में किसका बड़ा अज्र है? आपने फ़रमाया कि उनमें जो अल्लाह तआ़ला को बहुत याद करता हो। फिर उन साहिब ने नमाज़ियों, ज़कात देने वालों, हाजियों और सदक़ा देने वालों के मुताल्लिक़ भी यही सवाल किया और आपने यही जवाब दिया।

यह सवाल व जवाब सुनकर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ख़िताब करके फ़रमाया कि ऐ अबू हफ़्स! ज़िक्र करने वाले तो हर भलाई ले उड़े। इस पर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जी हाँ। (तरग़ीब)

ख़ुदा तआ़ला का साथ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि रसूले ख़ुदा सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैं उस वक़्त तक बन्दे के साथ रहता हूँ जब तक वह मुझको याद करता है और मेरी याद में उसके होंठ हिलते हैं। (बुख़ारी)

दिल की सफ़ाई

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते थे कि हर चीज़ की सफ़ाई होती है और दिल की सफ़ाई अल्लाह की याद है, और ज़िक्र से ज़्यादा कोई चीज़ अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाने वाली नहीं।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी इस क़द्र अल्लाह के अ़ज़ाब से नहीं बचाता जिस क़द्र ज़िक्र के ज़रिये बचाव होता है? आपने फ़रमाया हाँ! अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी इस क़द्र अल्लाह के अ़ज़ाब से नहीं बचाता अगरचे मारते-मारते मुजाहिद की तलवार क्यों न टूट जाये।

(दअ़वाते कबीर)

दुनिया में जन्नत का दीदार

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि ग़ाफ़िलों में ख़ुदा तआ़ला का ज़िक्र करने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे (मैदाने जंग से) भाग जाने वालों के बाद कोई जिहाद करने वाला हो। और ग़ाफ़िलों में अल्लाह का ज़िक्र करने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे हरी टहनी किसी सूखे दरख़्त में हो। और ग़ाफ़िलों में अल्लाह का ज़िक्र करने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे अन्धेरे में चिराग़ रखा हो। और ग़ाफ़िलों में रहते हुए ख़ुदा की याद में मशग़ूल रहने वाले को अल्लाह ज़िन्दगी में उसका जन्नत का मुक़ाम दिखा देगा। और ग़ाफ़िलों में ख़ुदा की याद करने वाले की मग़फ़िरत हर **फसीह** और हर **अअ़्जम** की तायदाद में होती है। (मिश्कात शरीफ़)

फसीह से जिन्नात और इनसान और **अअ़्जम** से जानवर मुराद हैं।

खुदा की बारगाह में तज़किरा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैं बन्दे के गुमान के पास हूँ। (जो गुमान वह मुझसे रखे) और उसके साथ होता हूँ जब वह मुझको याद करता है। सो अगर वह मुझको तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उसको तन्हाई में याद करता हूँ और जब वह मुझको जमाअ़त में याद करता है तों मैं भी उसको जमाअ़त में याद करता हूँ जो उसकी जमाअ़त से बेहतर होती है। (बुख़ारी)

"मैं भी उसको तन्हाई में याद करता हूँ" इसका मतलब यह है कि सिर्फ़ ख़ुद ही उसका ज़िक्र करता हूँ फ़रिश्तों के सामने उसका ज़िक्र नहीं करता। और यह जो फ़रमाया कि "जमाअ़त में याद करता हूँ जो उसकी जमाअ़त से बेहतर होती है" यानी मुक़र्रब फ़रिश्तों और रसूलों की रूहों में उसका तज़किरा करता हूँ जो सब मिलकर आम इनसानों से बेहतर और अफ़ज़ल हैं। (तय्यिबी)

"मैं बन्दे के गुमान के पास होता हूँ" इसका मतलब यह है कि मेरे मुताल्लिक़ जो बन्दा मग़फ़िरत और अ़ज़ाब का गुमान करता है तो मैं ऐसा ही करता हूँ। अगर वह गुमान रखता है कि ख़ुदा मुझको बख़्श देगा तो उसको बख़्श देता हूँ और अगर इसके ख़िलाफ़ गुमान रखता है तो नहीं बख़्शता हूँ। (लमआ़त)

एक रोज़ हज़रत साबित बनानी रह० कहने लगे कि मुझको मालूम हो जाता है जब मुझको मेरा ख़ुदा याद करता है। लोगों ने पूछा वह कैसे? फ़रमाया जब मैं उसको याद करता हूँ तो वह मुझको याद करता है लिहाज़ा जब कोई शख़्स अल्लाह की बारगाह में अपना ज़िक्र चाहे वह ख़ुदा का ज़िक्र शुरू कर दे।

तहज्जुद गुज़ारी के बदले

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जो शख़्स तुम में से रात को जागकर तकलीफ़ बरदाश्त करने से आजिज़ हो और माल ख़र्च करने में कन्जूसी करता हो और दुश्मन के साथ जिहाद करने से बुज़दिली करता हो उसको चाहिये कि अल्लाह का ज़िक्र बहुत करे। (तिबरानी)

बिना ख़र्च वाला नशीं

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर एक शख़्स की गोद में रुपये हों जिनको वह तक़सीम करता हो और दूसरा शख़्स ख़ुदा का ज़िक्र करता हो तो यह ज़िक्र करने वाला ही अफ़ज़ल रहेगा। (तरग़ीब)

बिस्तर पर बुलन्द दर्जे

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में बहुत-से लोग बिछे हुए बिस्तरों पर ज़रूर बिज़्ज़रूर अल्लाह का ज़िक्र करेंगे और (वह ज़िक्र) उनको बुलन्द दर्जों में दाख़िल करवा देगा। (तरग़ीब)

दीवाना बन जाओ

हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदा का ज़िक्र इस क़द्र ज़्यादा करो कि लोग तुमको दीवाना कहने लगें। (तरग़ीब)

रियाकारी की परवाह न करो

नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि इस क़द्र अल्लाह का ज़िक्र करो कि मुनाफ़िक़ लोग तुमको रियाकार

कहने लगें। (तरग़ीब)

नम्बर ले गये

एक बार रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मक्का शरीफ़ के रास्ते में जुमदान पहाड़ पर गुज़र हुआ तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि चलो यह जुमदान है, आगे बढ़ गये (अपने नफ़्सों को) तन्हा करने वाले, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया कि हज़रत तन्हा करने वाले कौन हैं? आपने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह को कसरत से याद करने वाले मर्द और अल्लाह को कसरत से याद करने वाली औ़रतें। (मुस्लिम शरीफ़)

और एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के जवाब में फ़रमाया कि हमेशा यादे ख़ुदा की हिर्स करने वाले अपने नफ़्सों को तन्हा करने वाले हैं। ख़ुदा का ज़िक्र उनका बोझ उतार देगा लिहाज़ा वे हल्के-फुल्के (मैदाने हश्र में) आयेंगे। (तिर्मिज़ी)

"अपने नफ़्सों को तन्हा करने वाले" यानी अपने ज़माने के लोगों से बिल्कुल अलग रवैया रखने वाले, कि सब लोग तो दुनियावी बकवास, बेहूदा ख़ुराफ़ात और बेकार की बातों में मशग़ूल हों मगर वे लोग सिर्फ़ अल्लाह की याद में वक़्त गुज़ारते हैं। (मिरक़ात)

मग़फ़िरत की निदा

हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि जब कुछ लोग अल्लाह का ज़िक्र करने के लिये जमा हो जायें और उनकी ग़रज़ उससे सिर्फ़ रिज़ा-ए-ख़ुदा हो तो (ख़ुदा का) मुनादी (आवाज़ देने वाला) आसमान से आवाज़ देता है कि उठ जाओ बख़्शे-बख़्शाये और मैंने तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदल दिया। (तरग़ीब)

मोती के मिंबर

सरवरे दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि क़ियामत के दिन खुदा तआला ज़रूर ऐसे लोगों को उठायेगा जिनके चेहरों पर नूर होगा (और) वे मोतियों के मिंबरों पर बैठे होंगे और ये हज़रात न नबी होंगे न शहीद होंगे (और) सब लोग उनपर रश्क करते होंगे। (यह सुनकर) एक देहाती (रसूले खुदा सल्ल० के सामने) दोज़ानूँ बैठ गये और अर्ज़ किया कि हज़रत! उनकी सिफ़तें बता दीजिये। (ताकि) हम उनको पहचान लें। आपने फ़रमाया कि ये वे हज़रात होंगे (जिनमें कोई रिश्ता-नाता न होगा और) जो मुख़्तलिफ़ क़बीलों और मुख़्तलिफ़ शहरों के होंगे (और इसके बावजूद) अल्लाह के लिये आपस में मुहब्बत करते थे (और) अल्लाह की याद के लिये जमा हुआ करते थे। (तरग़ीब)

दुनिया व आख़िरत की भलाई

हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि चार चीज़ें जिसको दी गईं उसको दुनिया और आख़िरत की भलाई दी गयी। (वे चीज़ें ये हैं) (1) शुक्रगुज़ार दिल (2) खुदा का ज़िक्र करने वाली ज़बान (3) बला पर सब्र करने वाला बदन (4) और अपने नफ़्स और उसके माल की हिफ़ाज़त करने वाली बीवी। (तरग़ीब)

सिर्फ़ एक चीज़

अब्दुल्लाह बिन बसर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि एक शख़्स ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! इस्लाम की चीज़ें तो बहुत हैं (जिनकी ज़िम्मेदारी भी) मुझ पर (बहुत है और सबकी अदायगी भी नहीं होती) लिहाज़ा मुझको आप एक ही चीज़ बता दीजिये जिसमें मैं लगा रहूँ। आपने फ़रमाया तेरी

ज़बान हमेशा यादे खुदा में तर रहे। (मिश्कात)

जिहाद से अफ्ज़ल

हज़रत सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने सवाल किया कि कियामत के दिन खुदा के नज़दीक कौन शख़्स सबसे अफ़्ज़ल और सबसे बुलन्द दरजे वाला होगा? आपने फ़रमाया कि अल्लाह को कसरत से याद करने वाले मर्द और अल्लाह को कसरत से याद करने वाली औरतें। (इस पर) एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि क्या ज़िक्र करने वाले अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले से भी अफ्ज़ल और बुलन्द दरजे वाले हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर (जिहाद करने वाला) अपनी तलवार से काफ़िरों और इनकारियों को इस क़द्र मारे कि तलवार टूट जाये और (वह शख़्स या तलवार) खून में रंग जाये तब भी अल्लाह का ज़िक्र करने वाला ही अफ्ज़ल रहेगा। (मिश्कात शरीफ़)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (सहाबा रज़ि० को ख़िताब करके) फ़रमाया कि क्या तुमको तुम्हारा वह अमल न बता दूँ जो तुम्हारे मालिक (खुदा तआला) के नज़दीक तमाम आमाल से बेहतर और पाकीज़ा है। और जो तुम्हारे दरजों को सब आमाल से ज़्यादा बुलन्द करने वाला है और तुम्हारे लिये सोना-चाँदी ख़र्च करने से बेहतर है और जो इससे (भी) बेहतर है कि तुम दुश्मन से बढ़ जाओ और उनकी गर्दनें उड़ाओ और वे तुम्हारी गर्दन उड़ायें? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जवाब में अर्ज़ किया कि जी हाँ! इरशाद फ़रमाइये। आपने फ़रमाया (वह अमल) अल्लाह का ज़िक्र है। (जो उन सबसे आला व अफ्ज़ल है)। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

दुनिया से रुख़सत होने के वक़्त

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बसर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक देहाती (सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु) ने हाज़िर होकर सवाल किया कि हज़रत! सब लोगों से बेहतर कौन है? आपने फ़रमाया ख़ुशी है उस शख़्स के लिये जिसकी उम्र लम्बी हो और अ़मल अच्छे हों। उन साहिब ने फिर अ़र्ज़ किया सबसे ज़्यादा कौनसा अ़मल अफ़ज़ल है? आपने फ़रमाया यह कि तू दुनिया से इस हालत में जुदा हो कि तेरी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र में तर हो। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

जन्नत के बाग़ीचे

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने (अपने सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से) इरशाद फ़रमाया कि जब जन्नत के बाग़ीचों पर गुज़रो तो खाया-पिया करो। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया कि जन्नत के बाग़ीचे कौनसे हैं? आपने फ़रमाया कि ज़िक्र की मजलिसें हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

फ़ायदा: खाने-पीने का मतलब यह है कि उन बाग़ीचों में जाकर बाग़ीचों वालों के अ़मल में शरीक हो जाओ। यानी ज़िक्र करने लगा करो।

फ़रिश्तों के सामने फ़ख़्र

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक बार रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की एक जमाअ़त के पास तशरीफ़ लाये (जो बैठे हुए थे)। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे दरियाफ़्त फ़रमाया कि तुमको यहाँ किस चीज़ ने बैठा रखा है? सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि हम बैठे हुए ख़ुदा का

ज़िक्र कर रहे हैं और उसकी तारीफ़ बयान कर रहे हैं कि उसने हमको इस्लाम की हिदायत दी और इसकी वजह से हमपर एहसान किया। आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! क्या तुमको सिर्फ़ इसी चीज़ ने बैठा रखा है? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम! हमको सिर्फ़ इसी चीज़ ने बैठा रखा है। आपने फ़रमाया कि ख़ूब समझ लो मैंने तुमको झूठा समझकर क़सम नहीं खिलाई लेकिन बात दर असल यह है कि (अभी) मेरे पास जिबराईल आये थे और मुझको यह बता गये कि अल्लाह पाक फ़रिश्तों के सामने तुमको फ़ख़्र (गर्व) के तौर पर पेश फ़रमा रहे हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात

रहमतुल्लिल् आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: कोई अ़मल बन्दे को इस क़द्र ख़ुदा के अ़ज़ाब से नहीं बचाता जिस क़द्र ख़ुदा की याद बचाती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

फ़ायदा

यानी सारे नेक आमाल ख़ुदा के अ़ज़ाब से नजात दिलाने का ज़रिया हैं मगर उन सबमें से अफ़ज़ल अल्लाह का ज़िक्र है जिसके बराबर कोई भी अ़मल नहीं। इससे बढ़कर अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला और कोई अ़मल नहीं।

अ़र्शे इलाही के साये में

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान है कि सात शख़्स ऐसे हैं जिनको ख़ुदावन्द तआ़ला अपने साये में रखेगा जबकि उसके साये के अ़लावा कोई साया न होगा:

(1) इन्साफ़ करने वाला मुसलमान बादशाह।

(2) वह जवान जो अल्लाह तआ़ला की इबादत में पला-बढ़ा।

(3) वह शख़्स जिसका दिल मस्जिद में अटका रहता है।

(4) वे दो शख़्स जिन्होंने आपस में अल्लाह के लिये मुहब्बत रखी और उसी पर मुलाक़ात की और उसी पर जुदा हुए।

(5) वह शख़्स जिसको किसी रुतबे वाली और हसीन औरत ने (बुरे काम की) दावत दी और उसने (साफ़) जवाब दिया कि मैं तो अल्लाह से डरता हूँ।

(6) वह शख़्स जिसने दाहिने हाथ से सदक़ा किया और उसको पोशीदा रखा यहाँ तक कि उसका बाँया हाथ भी नहीं जानता कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया।

(7) वह शख़्स जिसने तन्हाई में ख़ुदा को याद किया और उसके आँसू बह पड़े। (बुख़ारी शरीफ़)

मुर्दा और ज़िन्दा

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मिसाल उस शख़्स की जो अपने रब को याद करे और उसकी मिसाल जो अपने रब को याद न करे ज़िन्दा और मुर्दा की मिसाल है। (बुख़ारी)

फ़ायदा

यानी ख़ुदा की याद में मशग़ूल रहने वाला ज़िन्दा है और इससे ग़ाफ़िल रहने वाला मुर्दा है। ज़िक्र करने वालों को हमेशा की ज़िन्दगी नसीब होती है। उनको ख़ुदा तआ़ला का ख़ास ताल्लुक़ हासिल होता है। वे दोनों जहान में अमन व चैन की ज़िन्दगी बसर करते हैं:

हरगिज़ न मीरद आँ कि दिलश ज़िन्दा शुद ब-इश्क़
सबत अस्त बर जरीदा-ए-आ़लम दवामे मा

तर्जुमाः वे लोग कभी नहीं मरते जिनका दिल अल्लाह के इश्क़ से

ज़िन्दा हो गया। जब तक यह दुनिया बाक़ी रहेगी हम भी बाक़ी रहेंगे।

ज़िक्र करने वाले के विपरीत वे लोग हैं जिनको दुनिया व आख़िरत का होश नहीं। उनका बातिन मुर्दा और गन्दा और ज़ाहिर मुरझाया हुआ रहता है। बज़ाहिर वे जानदार मालूम होते हैं मगर बन्दगी की रूह से कोरे और ख़ाली होते हैं।

इनसानी सूरत और ढाँचा ज़रूर उनके पास होता है मगर उनकी ज़िन्दगी बे-सौदा और बे-फ़ायदा होती है। जिस तरह मुर्दा कुछ कमाई और काम-धन्धा नहीं करता और अमली तरक़्क़ी के ज़ीने पर नहीं चढ़ता उसी तरह अल्लाह का ज़िक्र न करने वाले का हाल है। उनमें से कभी किसी को थोड़ी-बहुत दुनिया तो मिल जाती है मगर आख़िरत की ग़फ़लत उनको दुनिया में रहते हुए मुर्दा बना देती है।

हुज़ूरे अकरम सल्ल० का जवाब

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझ पर यह बात पेश की कि (अगर तुम चाहो तो) मक्का के संगरेज़ों (पत्थर के टुकड़ों) को तुम्हारे लिये सोना बना दूँ। मैंने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! (मैं) नहीं (चाहता) लेकिन (मैं तो यह चाहता हूँ) कि एक रोज़ पेट भरकर खा लूँ और दूसरे रोज़ भूखा रहूँ। सो जब भूखा रहूँ तो तेरी तरफ़ आजिज़ी करूँ और तेरी याद में लगूँ और जब पेट भर लूँ तो तेरी तारीफ़ बयान करूँ और तेरा शुक्र करूँ। (अहमद, तिर्मिज़ी)

करवट में कबूल

हज़रत रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जो शख़्स पाक होने की सूरत में (यानी वुज़ु के साथ) अपने बिस्तर पर पहुँचा और नींद आने तक अल्लाह को याद करता

रहा तो रात को जिस वक़्त भी करवट बदलते हुए अल्लाह से किसी दुनिया और आख़िरत की भलाई का सवाल करेगा तो ख़ुदा तआला वह भलाई उसको ज़रूर देगा। (मिश्कात शरीफ़)

शैतान की नाकामी

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जब इनसान अपने घर में दाख़िल हो और दाख़िल होते वक़्त अल्लाह को याद किया तो शैतान (अपने साथियों से कहता है चलो) यहाँ न रात को ठहर सकते हो और न खा सकते हो। और जब (इनसान) अपने घर में दाख़िल हुआ और दाख़िल होते वक़्त अल्लाह को याद न किया तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है कि तुम (यहाँ) रात को ठहरने में कामयाब हो गये। और जब खाते वक़्त अल्लाह को याद न किया तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि तुम यहाँ रात को ठहरने और खाना खाने में कामयाब हो गये। (मुस्लिम शरीफ़)

फ़जर और अ़स्र की नमाज़ के बाद ज़िक्र का सवाब

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़े फिर सूरज निकलने तक बैठा हुआ अल्लाह को याद करता रहे फिर दो रकअ़तें पढ़ ले तो उसको पूरे एक हज और एक उमरे का सवाब मिलेगा। (तिर्मिज़ी)

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़जर की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक पालती मारकर बैठे रहते थे, और आपने फ़जर की नमाज़ और अ़स्र की नमाज़ के बाद अल्लाह की याद में मशग़ूल होने की तरग़ीब दी है। और इस बारे में बहुत-सी फ़ज़ीलतों से बा-ख़बर किया है चुनाँचे एक हदीस में है कि आपने फ़रमाया है मुझे इसमाईल

अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है कि ज़रूर उन लोगों के साथ बैठ जाऊँ जो फ़जर की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक अल्लाह को याद करते रहें। और चार गुलाम आज़ाद करने से मुझको यह बहुत ज़्यादा पसन्द है कि ज़रूर उन लोगों के साथ बैठ जाऊँ जो अ़स्र की नमाज़ से सूरज छुपने तक अल्लाह को याद करते हैं। (अबू दाऊद शरीफ़)

दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स फ़जर की नमाज़ पढ़ ले फिर बैठा बैठा सूरज निकलने तक अल्लाह को याद करता रहे तो उसके लिये जन्नत वाजिब हो गयी। (तरग़ीब व तरहीब)

एक बार रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने (मुजाहिदीन का) दस्ता नज्द की तरफ़ भेजा जिनको बहुत ज़्यादा ग़नीमत (दीन की लड़ाई में जो माल दुश्मन से हासिल हो उसको ग़नीमत कहते हैं) के माल हाथ लगे और जल्दी वापस आ गये। यह देखकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा कि हमने कोई दस्ता ऐसा नहीं देखा जो इस दस्ते के मुक़ाबले में ज़्यादा ग़नीमत का माल लाया हो और इस क़द्र जल्दी वापस आया हो। इस पर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबू बक्र! क्या मैं तुझको ऐसा शख़्स न बताऊँ जो इस दस्ते से भी ज़्यादा जल्दी वापस होने वाला और माले ग़नीमत हासिल करने वाला हो। (सुनो!) यह वह शख़्स है जो जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़े फिर सूरज निकलने तक अल्लाह को याद करता रहे। (तरग़ीब व तरहीब)

फ़ायदाः बाज़ रिवायत में है कि जिस जगह फ़जर की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ी हो उसी जगह बैठा हुआ ज़िक्र करता रहे। औरतें घर में बिना जमाअ़त के नमाज़ पढ़ती हैं वे भी ज़िक्र का एहतिमाम करें, मुसल्ले पर बैठी-बैठी ज़िक्र करती रहें और इशराक़ पढ़कर बहुत बड़ा अज्र पायेंगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला। अगर किसी

वजह से मुसल्ला छोड़ना पड़े तो भी ज़िक्र करती रहें। फ़जर और अस्र के बाद ज़िक्र का ख़ास वक़्त है और इसकी बहुत ही फ़ज़ीलत है।

निफ़ाक़ से बरी

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जिसने ख़ुदा का ज़िक्र बहुत किया वह निफ़ाक़ (कीना-कपट और दिल के खोट) से बरी हो गया। (तरग़ीब) -

ज़िक्र छोड़ने की वईदें

अब वे मुबारक हदीसें दर्ज की जाती हैं जिनमें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होने वालों के लिये वईदें (तंबीह, डाँट-डपट और सज़ा की धमकी) बयान की गयी हैं।

मुर्दा गधे के पास से उठे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब कुछ लोग किसी जगह (बैठे फिर वहाँ) से उठकर खड़े हुए और उस मजलिस में अल्लाह का ज़िक्र न किया तो वे गोया मुर्दा गधे को छोड़कर उठे और यह मजलिस (आख़िरत में) उनके लिये हसरत व अफ़सोस का सबब होगी। (अहमद अबू दाऊद)

ज़बरदस्त नुक़सान

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी बैठने की जगह बैठा और उसने उस जगह अल्लाह का ज़िक्र न किया तो अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से उसका यह बैठना उसके लिये नुक़सान का सबब होगा। और जो शख़्स किसी जगह लेटा और उसने उस लेटने में (शुरू से आख़िर तक किसी वक़्त भी) अल्लाह का ज़िक्र न किया तो उसका यह लेटना अल्लाह की तरफ़ से नुक़सान का

सबब होगा। (अबू दाऊद शरीफ़)

और जो शख़्स किसी जगह चला और उस चलने के दरमियान अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया तो उसके लिये यह चलना नुक़सान का सबब होगा। (तरग़ीब में यह हिस्सा ज़्यादा है)।

हर बात वबाल है

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि इनसान की हर बात उसके लिये वबाल है (और) उसके लिये नफ़े की चीज़ नहीं है मगर (नफ़े की चीज़ें ये हैं) (1) किसी भलाई का हुक्म करना (2) किसी बुराई से रोक देना (3) या अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करना। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

लानत से कौन महफ़ूज़ है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ख़बरदार! इसमें कोई शुब्हा नहीं कि सारी दुनिया मलऊन है और इसमें जो कुछ है वह भी मलऊन है सिवाए अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के, और जो अल्लाह के ज़िक्र के ताबे हो, और दीन का आ़लिम और (दीन का) तालिब-इल्म (यानी दीन का इल्म सीखने वाला)। (तिर्मिज़ी)

मतलब यह कि दुनिया की हर चीज़ मरदूद है, अल्लाह तआ़ला की रहमत से दूर है, बारगाहे ख़ुदावन्दी में ना-मक़बूल है चाहे कैसी ही ख़ूबसूरती और कारीगरी के साथ बनी हुई हो और दुनिया वालों को कैसी ही भाती हो, अलबत्ता अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और वे चीज़ें ख़ुदा तआ़ला के यहाँ मक़बूल हैं जो ज़िकरुल्लाह के ताबे हों यानी अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और ख़ुश्नूदी के लिये जो कुछ हो वह सब अल्लाह के यहाँ मक़बूल है जैसे अल्लाह की रिज़ा के लिये हलाल माल ख़र्च करना, दीनी मदरसा खोलना, मस्जिद बनाना, ग़रीबों को खाना

खिलाना, किताबें लिखना, बाल-बच्चों की परवरिश करना, माँ-बाप के हुक़ूक़ अदा करना वग़ैरह वग़ैरह। और दीन का आ़लिम और दीन का सीखने वाला भी ख़ुदा की लानत से महफ़ूज़ है, और ख़ुदा तआ़ला के यहाँ मक़बूल व महबूब है। आ़लिमों ने बताया है कि जो शख़्स भी अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में लगा हुआ है वह ज़ाकिर है यानी ज़बान से या दिल से या अ़मल से अल्लाह के काम में या अल्लाह के नाम में जो मशग़ूल है वह ज़ाकिर (ज़िक्र करने वाला) है, ग़ाफ़िलों में शुमार नहीं। अल्लाह तआ़ला हमें भी अधना ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये, आमीन।

सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अकबर का विर्द रखने के फ़ज़ाइल

हदीसः (6) हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने बयान फ़रमाया कि एक दिन हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे पास से गुज़रे मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं बूढ़ी और कमज़ोर हो गयी हूँ (मेहनत और मुजाहदे वाले आमाल करना दुश्वार है)। आप मुझे ऐसा अ़मल बता दें जिसे मैं बैठे-बैठे करती रहा करूँ। आपने फ़रमाया सौ बार अल्लाह की तसबीह बयान कर (जैसे सुब्हानल्लाह कह ले) यह अ़मल तेरे लिये (सवाब में) ऐसे सौ गुलामों के आज़ाद करने के बराबर होगा जो हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद से हों। और सौ बार अल्लाह की तारीफ़ बयान कर (जैसे अल्हम्दु लिल्लाह कह ले) यह अ़मल तेरे लिये (सवाब में) ऐसे सौ घोड़े अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों को देने के बराबर होगा जिन पर ज़ीन कसी हुई हो और लगाम लगी हुई हो। और सौ बार अल्लाह की बड़ाई बयान कर (जैसे अल्लाहु अकबर कह ले) यह अ़मल तेरे लिये क़ुरबानी के ऐसे सौ बड़े जानवर (गायें, ऊँट) सदक़ा करने के बराबर होगा

जिनके गलों में कलादे पड़े हों और वे अल्लाह की बारगाह में मकबूल हो जायें। और सौ बार ला इला-ह इल्लल्लाहु कह ले, इस अ़मल का सवाब आसमान व ज़मीन के दरमियान को भर देगा। और जिस दिन तू यह अ़मल कर लेगी उस दिन मक्का में कोई शख़्स ऐसा न होगा जिसका अ़मल तेरे अ़मल से बढ़कर हो और अल्लाह की बारगाह में पेश करने के लिये ऊपर उठाया जा रहा हो। हाँ! अगर कोई शख़्स तेरे जैसा अ़मल कर ले तो उसका अ़मल भी तेरे बराबर होगा।

(तरग़ीब व तरहीब जिल्द 2 पेज 245)

तशरीहः हर ऐब और नुक़सान से अल्लाह तआ़ला पाक है, इसके बयान करने को **तसबीह** कहा जाता है। और अल्लाह तआ़ला तमाम कमालात की सिफ़ात वाला है वह तारीफ़ ही का हक़दार है, इसके बयान करने को **तहमीद** कहा जाता है। और अल्लाह की बड़ाई बयान करने को (कि वह सबसे बड़ा है) **तकबीर** कहा जाता है। **ला इला-ह इल्लल्लाहु** (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) इसको **तहलील** कहा जाता है। **सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर** में चारों चीज़ें यानी **तसबीह** और **तहमीद** और **तकबीर** और **तहलील** बयान की जाती हैं।

हदीसः (7) हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान फ़रमाया है कि मैं हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ एक औ़रत के पास गया जिनके सामने गुठलियाँ या कंकरियाँ पड़ी हुई थीं और वह उनपर अल्लाह की तसबीह पढ़ रही थीं। आपने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें इससे आसान सूरत न बतला दूँ? या फ़रमाया क्या इससे अफ़ज़ल बात न बता दूँ? जिसमें अलफ़ाज़ मुख़्तसर हों और सवाब ज़्यादा हो। तुम यह पढ़ा करोः

सुब्हानल्लाहि अ़-द-द मा ख़-ल-क़ फ़िस्समा-इ

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ जिस क़द्र आसमानों

में उसकी मख़्लूक़ है। और:

सुब्हानल्लाहि अ़-द-द मा ख़-ल-क़ फ़िल्-अर्ज़ि

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ जिस क़द्र ज़मीन में उसकी मख़्लूक़ है। और:

सुब्हानल्लाहि अ़-द-द मा बै-न ज़ालि-क

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ जिस क़द्र आसमान व ज़मीन के दरमियान मख़्लूक़ है। और:

सुब्हानल्लाहि अ़-द-द मा हु-व ख़ालिकुन्

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ उस मख़्लूक़ की मात्रा में जिसे अल्लाह तआ़ला आईन्दा पैदा फ़रमायेंगे। और:

ला इला-ह इल्लल्लाहु भी इसी तरह पढ़ो। और **ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि** भी इसी तरह पढ़ो। इसका मतलब यह है कि हर एक के साथ वे अलफ़ाज़ बढ़ाती जाओ जो सुब्हानल्लाहि के साथ बढ़ाए जैसे यूँ कहो:

अल्लाहु अकबरु अ़-द-द मा ख़-ल-क़ फ़िस्समा-इ। अल्लाहु अकबरु अ़-द-द मा ख़-ल-क़ फ़िल्-अर्ज़ि। अल्लाहु अकबरु अ़-द-द मा बै-न ज़ालि-क। अल्लाहु अकबरु अ़-द-द मा हु-व ख़ालिकुन्।

इसी तरह **ला इला-ह इल्लल्लाहु** और **अल्हम्दु लिल्लाहि** और **ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि** के साथ मिलाकर पढ़ो। **ला इला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबरु** की बहुत फ़ज़ीलत आई है। इस सिलसिले में चन्द और हदीसों का तर्जुमा लिखा जाता है।

जन्नत में दाख़िला

हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने (एक बार) इरशाद फ़रमाया कि जिसने इख़्लास के साथ **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कह लिया वह जन्नत में दाख़िल होगा। किसी ने अ़र्ज़ किया कि इसका

इख़्लास क्या है? आपने फ़रमाया इसका इख़्लास यह है कि पढ़ने वाले को ख़ुदा की मना की हुई चीज़ों से रोक दे। (तिबरानी)

यानी इस कलिमे को इख़्लास के साथ पढ़ने का मतलब यह है कि इसको ख़ूब समझकर पढ़े और सच्चे दिल से यक़ीन के साथ ख़ुदा के माबूद होने का इक़रार करे। और यह यक़ीन करे कि अल्लाह तआ़ला हाज़िर व नाज़िर है, क़ुदरत वाला है, बहुत जल्द हिसाब लेने वाला और सख़्त सज़ा देने वाला है। इसका पुख़्ता यक़ीन करने से फिर अपने आप से गुनाह न होंगे।

अ़र्श तक

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जब कभी भी कोई शख़्स इख़्लास के साथ **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहेगा तो उसके लिये आसमान के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे। यहाँ तक कि वह अ़र्श तक पहुँच जायेगा जब तक कि बड़े गुनाहों से बचता रहे। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

अल्लाह तआ़ला तक पहुँचना

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि **तसबीह** (सुब्हानल्लाहि) आधी तराज़ू है और **अल्हम्दु लिल्लाहि** तराज़ू को भर देता है, और **ला इला-ह इल्लल्लाहु** के लिये कोई पर्दा नहीं है यहाँ तक कि वह ख़ुदा के पास पहुँचे। (तिर्मिज़ी)

सुब्हानल्लाहि आधी तराज़ू है यानी क़ियामत के दिन सुब्हानल्लाहि का सवाब आधी तराज़ू को भर देगा और अल्हम्दु लिल्लाहि का सवाब पूरी तराज़ू को भर देगा।

मिश्कात शरीफ़ (किताबुत्तहारत) में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्हम्दु लिल्लाहि तराज़ू को भर देता

है और सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि भर देते हैं ज़मीन व आसमान के दरमियान को। (मुस्लिम शरीफ़)

दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, से अफ़ज़ल

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुझको **सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु** कहना उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्यारा है जिन पर सूरज निकलता है। (मुस्लिम)

यानी इसका एक बार पढ़ लेना उस सबसे बेहतर है जो आसमान के नीचे है।

रोज़ाना हज़ार नेकियाँ

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि (एक बार) हम रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास मौजूद थे। आपने फ़रमाया क्या तुम से यह नहीं हो सकता कि हज़ार नेकियाँ रोज़ाना कमा लो? यह सुनकर मजलिस में मौजूद हज़रात में से एक साईल ने सवाल किया: हम में से कोई शख़्स कैसे हज़ार नेकियाँ कमाये? आपने फ़रमाया सौ मर्तबा **सुब्हानल्लाहि** कह ले तो उसके लिये हज़ार नेकियाँ लिख दी जायेंगी और उसके हज़ार (छोटे) गुनाह ख़त्म कर दिये जायेंगे। (मुस्लिम)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को हिदायत

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मर्तबा ज़िक्र फ़रमाया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआ़ला से अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझे कोई ऐसी चीज़ बता दीजिये जिसके ज़रिये (वज़ीफ़े के तौर पर) आपको याद किया करूँ और आपको पुकारूँ। रब्बुल्–

आलमीन ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मूसा! **ला इला-ह इल्लल्लाहु** पढ़ा करो। यह सुनकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ मेरे परवर्दिगार! इसको तो तेरे सब ही बन्दे पढ़ते हैं। मैं तो ऐसी चीज़ चाहता हूँ जो ख़ास आप मुझको बतायें। रब तआला शानुहू ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मूसा! (इसको मामूली न समझो) सातों आसमान और जो मेरे अलावा उनके आबाद करने वाले हैं और सातों ज़मीनें अगर एक पलड़े में रख दी जायें और **ला इला-ह इल्लल्लाहु** दूसरे पलड़े में रख दिया जाये तो **ला इला-ह इल्लल्लाहु** (का पलड़ा वज़नी होने की वजह से) उन सबके मुकाबले में झुक जायेगा। (मिश्कात शरीफ़)

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम का पैग़ाम

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जिस रात मुझको सैर कराई गई (यानी मेराज की रात में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मिला तो उन्होंने मुझसे फ़रमाया कि ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी उम्मत को मेरा सलाम कह दीजियो और उनको बतला दीजियो कि जन्नत की अच्छी मिट्टी है और मीठा पानी है, और वह चटियल मैदान है, और उसके पौधे ये हैं: **सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाह व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु**। (मिश्कात शरीफ़)

मतलब यह है कि जन्नत में अगरचे दरख़्त भी हैं फल और मेवे भी हैं मगर उनके लिये चटियल मैदान ही है जो नेक अमल से ख़ाली हैं। जन्नत की ऐसी मिसाल है जैसे कोई ज़मीन खेती के लायक़ हो उसकी मिट्टी अच्छी हो, उसके पास बेहतरीन मीठा पानी हो और जब उसको बो दी जाये तो उसकी मिट्टी में अपनी सलाहियत (क्षमता) और बेहतरीन पानी सिंचाव की वजह से अच्छे दरख़्त और बेहतरीन ग़ल्ले पैदा हो जायें। बिल्कुल इसी तरह जन्नत को समझ लो कि जो

कुछ यहाँ बो दोगे वहाँ काट लोगे, और बे-अ़मल के लिये ख़ाली ज़मीन की तरह है।

पूरे सौ

आँ हज़रत सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह को सौ बार **सुब्हानल्लाहि** कहे और शाम को सौ बार **सुब्हानल्लाहि** कहे उसको सौ हज करने का सवाब मिलेगा। और जो शख़्स सौ बार सुबह को ख़ुदा की हम्द (तारीफ़ बयान) करे (अल्हम्दु लिल्लाहि कहे) और सौ बार शाम को ख़ुदा की हम्द करे तो उसको मुजाहिदीन को सौ घोड़े देने का सवाब मिलेगा। और जिसने सौ बार सुबह को और सौ बार शाम को **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहा उसको हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से सौ गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। और जिसने सौ बार सुबह को और सौ बार शाम को **अल्लाहु अकबरु** कहा तो उस दिन कोई दूसरा शख़्स उसके बराबर अ़मल करने वाला न होगा सिवाय उस शख़्स के जिसने उसके बराबर या उससे ज़्यादा (ये ज़िक्र हुए) कलिमात कहे हों। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

पतझड़ की तरह

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि एक बार रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक ऐसे दरख़्त पर गुज़रे जिसके पत्ते सूखे हुए थे। आपने उसमें लाठी मारी जिसकी वजह से पत्ते झड़ गये। आपने फ़रमाया कि **अल्हम्दु लिल्लाह** और **सुब्हानल्लाह** और **ला इला-ह इल्लल्लाह** और **अल्लाहु अकबर** बन्दे के गुनाहों को इस तरह गिरा देते हैं जिस तरह इस दरख़्त के पत्ते गिर रहे हैं। (तिर्मिज़ी)

तमाम ज़िक्रों में अफ़ज़ल

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम से रिवायत है कि सरवरे आ़लम ने इरशाद फ़रमाया कि सब ज़िक्रों में अफ़ज़ल ज़िक्र **ला इला-ह इल्लल्लाहु** है, और सब दुआ़ओं से अफ़ज़ल दुआ़ **अल्हम्दु लिल्लाह** है। (तिर्मिज़ी व इब्ने माजा)

जन्नत की कुन्जियाँ

हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया जन्नत की कुन्जियाँ **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की गवाही देना है। (तरग़ीब)

99 दफ़्तर

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रहमतुल्लिल्-आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन मेरे एक उम्मती को तमाम मख़्लूक़ों के सामने बुलायेंगे, फिर उसके गुनाहों के निन्नानवे (99) दफ़्तर खोल देंगे। हर दफ़्तर इतनी दूर तक फैला होगा जितनी दूर तक नज़र पहुँचती होगी। फिर अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेंगे कि क्या इन लिखे हुए आमाल में से तू किसी चीज़ का इनकार करता है? क्या मेरे लिखने वाले पहरेदारों ने तुझ पर ज़ुल्म किया है? वह शख़्स अ़र्ज़ करेगा कि ऐ मेरे रब! (मैं इनकारी नहीं हूँ और पहरेदारों ने ज़ुल्म) नहीं! (किया)। रब्बुल्-आ़लमीन इरशाद फ़रमायेंगे तो क्या तेरे पास कुछ उज़्र है? वह कहेगा नहीं! अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे हाँ! हमारे पास तेरी एक नेकी मौजूद है और बेशक आज तुझ पर कोई ज़ुल्म न होगा। उसके बाद एक पर्चा निकाला जायेगा जिसमें **अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू** लिखा होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि अपने आमाल का वज़न देख! वह अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! इन दफ़्तरों के सामने इस पर्चे की क्या हक़ीक़त है, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे बेशक आज तुझ पर ज़ुल्म न होगा (कि सिर्फ़ तेरी बुराइयाँ तौल दी जायें और नेकी को छुपा लिया जाये)।

चुनाँचे उन दफ़्तरों को एक पलड़े में और उस पर्चे को दूसरे पलड़े में रख दिया जायेगा। सो वे सब दफ़्तर (उस पर्चे के मुक़ाबले में) हल्के हो जायेंगे। (मिश्कात शरीफ़)

360 जोड़ों का शुक्रिया

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हर इनसान के जिस्म में तीन सौ साठ 360 जोड़ों को पैदा किया है (और हर जोड़ की तरफ़ से बतौर शुक्रिया सदक़ा करना लाज़िम है)। पस जिसने **अल्लाहु अकबर** कहा और **अल्हम्दु लिल्लाह** कहा और **ला इला-ह इल्लल्लाह** कहा और **सुब्हानल्लाह** कहा और **अस्तग़फ़िरुल्लाह** कहा और कोई पत्थर या काँटा या हड्डी लोगों के रास्ते से हटाई या भलाई का हुक्म कर दिया या बुराई से (किसी को) रोक दिया (और उनमें सब या थोड़ा मिलाकर या एक ही की तायदाद 360 हो गयी, वह उस दिन उस हाल में चलता-फिरता होगा कि उसने अपनी जान को दोज़ख़ से बचा लिया। (मुस्लिम शरीफ़)

ढाल ले लो

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि एक मर्तबा रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अपनी ढाल संभाल लो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया क्या दुश्मन आ गया? आपने फ़रमाया (दुश्मन से बचाने वाली ढाल को नहीं कह रहा हूँ बल्कि) दोज़ख़ की ढाल संभाल लो! **सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर्** क्योंकि यह क़ियामत के दिन आगे पीछे आयेंगे और ये बाक़ी रहने वाली नेकियाँ हैं। (तरग़ीब)

उहुद पहाड़ के बराबर

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक

बार रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क्या तुमसे यह नहीं हो सकता कि रोज़ाना उहुद (पहाड़) की बराबर अ़मल कर लिया करो। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया वह क्या अ़मल है? फ़रमाया **सुब्हानल्लाह** उहुद से बड़ा है और **अल्हम्दु लिल्लाह** उहुद से बड़ा है, और **ला इला-ह इल्लल्लाहु** उहुद से बड़ा है, और **अल्लाहु अकबर** उहुद से बड़ा है। (तरग़ीब)

चार कलिमों का चयन

हज़रत अबू सईद और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का बयान है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदा तआ़ला ने सारे कलाम से चार कलिमे छाँटे हैं: **सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर**। जिसने एक बार सुब्हानल्लाह कहा उसके लिये बीस नेकियाँ लिख दी जायेंगी और उसके बीस गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। और जिसने एक मर्तबा अल्लाहु अकबर कहा तो उसका सवाब भी यही है और जिसने एक मर्तबा ला इला-ह इल्लल्लाह कहा तो भी यही सवाब है। और जिसने अपने दिल से अल्हम्दु लिल्लाही रब्बिल् आ़लमीन कहा उसके लिये तीस नेकियाँ लिख दी जायेंगी और उसके तीस गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। (तरग़ीब)

ईमान ताज़ा किया करो

एक हदीस में है कि सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़राते सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से इरशाद फ़रमाया कि अपना ईमान ताज़ा किया करो। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने सवाल किया कि हम अपना ईमान कैसे ताज़ा करें? आपने फ़रमाया कि कसरत से **ला इला-ह इल्लल्लाहु** पढ़ा करो। (तरग़ीब व तरहीब)

तसबीहाते फ़ातिमा

सोते वक़्त और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तसबीह तहमीद और तकबीर

हदीसः (8) हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बयान है कि (एक बार) हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अ़न्हा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और चक्की पीसने के निशान जो उनके हाथों में थे उनको दिखाकर अपनी तकलीफ़ ज़ाहिर करने का इरादा किया। (मक़सद यह था कि कोई गुलाम या बाँदी मिल जाये) और वजह यह थी कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सुना था कि आजकल आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास गुलाम-बाँदी आए हुए हैं। हज़रत फ़ातिमा नबी करीम के घर पहुँची तो वहाँ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ न रखते थे, लिहाज़ा मुलाक़ात न हो सकी। (जिसकी वजह से) अपनी दरख़्वास्त हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से कह आईं। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये तो हज़रत आ़यशा ने अ़र्ज़ कर दिया कि हज़रत फ़ातिमा तशरीफ़ लायी थीं वह ऐसी-ऐसी बात कह गयी हैं (कि मुझे चक्की पीसने की वजह से तकलीफ़ है, अगर ख़िदमत के लिये कोई गुलाम या बाँदी मिल जाये तो मेहनत के काम से नजात मिल जाये)।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि यह बात सुनकर आप रात को हमारे पास तशरीफ़ लाये, उस वक़्त हम (दोनों मियाँ-बीवी) सोने के लिये लेट चुके थे। (आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अदब व सम्मान के लिये) उठने लगे तो फ़रमाया तुम दोनों अपनी-अपनी जगह पर रहो। हमारे क़रीब तशरीफ़ लाये और मेरे और

सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दरमियान बैठ गये, और इतने क़रीब मिलकर बैठ गये कि मुबारक क़दम की ठण्डक मुझे अपने पेट पर महसूस होने लगी। फिर आपने इरशाद फ़रमाया कि क्या मैं तुम दोनों को उससे बेहतर न बता दूँ जो तुमने मुझसे सवाल किया? तुम ऐसा किया करो कि (रात को) सोने के लिये लेटो तो 33 बार सुब्हानल्लाह और 33 बार अल्हम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अकबर कह लिया करो। यह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है।

(मिश्कात शरीफ़ पेज 209)

तशरीहः मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को इस मौक़े पर (फ़र्ज़) नमाज़ के बाद भी यह तसबीहात पढ़ने को इरशाद फ़रमाया। फ़र्ज़ नमाज़ के बाद और सोते वक़्त इन तसबीहात को पाबन्दी से पढ़ना चाहिये। बुज़ुर्गों ने बताया है और तर्जुबा किया गया है कि चूँकि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़ादिम देने के बजाय सोते वक़्त इन तसबीहात के पढ़ने का इरशाद फ़रमाया था इसलिये सोते वक़्त इनके पढ़ने से एक तरह की कुव्वत हासिल होती है और दिन भर की थकान, मेहनत और काम-काज की दुखन दूर हो जाती है।

हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमाया कि जब से मैंने यह वज़ीफ़ा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना कभी इसको नहीं छोड़ा। अलबत्ता जंगे सिफ़्फ़ीन (1) के मौक़े पर भूल गया था, फिर आख़िर रात में याद आया तो इन कलिमात को पढ़ लिया। (अबू दाऊद)

हज़रत अ़ली रज़ि० के इस अ़मल से यह भी मालूम हुआ कि अगर शुरू रात में सोते वक़्त पढ़ने से यह तसबीहात रह जायें तो बाद

(1) सिफ़्फ़ीन एक जगह का नाम है वहाँ हज़रत मुआ़विया और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दरमियान जंग हुई थी इसलिये इसे जंगे सिफ़्फ़ीन कहते हैं। बड़ी ज़बरदस्त जंग हुई थी।

में जब भी मौक़ा लगे रात को किसी भी वक़्त पढ़ ली जायें।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० घर का काम-काज खुद करती थीं

ऊपर जो हमने पूरी हदीस तर्जुमे के साथ नक़ल की है उसमें इस बात का ज़िक्र है कि हज़रत सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने हाथों पर चक्की पीसने के निशानात दिखाकर गुलाम या बाँदी हासिल करने के लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई थीं। दूसरी रिवायत में है कि सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा सिर्फ़ चक्की ही नहीं पीसती थीं बल्कि पानी का मशक भी भरकर लाती थीं, जिससे कपड़े गुबार में भर जाते थे, और हांडी के नीचे आग भी खुद ही जलाती थीं जिससे उनके कपड़ों का रंग धुएं के असर से सियाही माईल हो जाता था। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी मेहनत व मशक़्क़त और तकलीफ़ की शिकायत करके गुलाम या बाँदी की दरख़्वास्त की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको न बाँदी अता फरमाई न गुलाम दिया, बल्कि आपने यह फ़रमाया कि जो गुलाम बाँदी आये थे वे तुमसे पहले बदर के शहीदों के यतीम बच्चे ले गये। (अबू दाऊद, बाब सोने के वक़्त तसबीह का बयान)

दूसरी रिवायत में यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया खुदा की क़सम! ऐसा न करूँगा कि यह गुलाम या बाँदी तुमको दे दूँ और सुफ़्फ़ा के सहाबा को छोड़ दूँ जिनके पेट भूख से परेशान हैं। इनकी क़ीमत सुफ़्फ़ा के सहाबा पर ख़र्च करूँगा। फिर रात को उनके पास तशरीफ़ ले गये, उस वक़्त दोनों एक ऐसी छोटी चादर में लेटे हुए थे कि सर ढाँकते तो पाँव खुल जाते थे और पाँव ढाँकते तो सर खुल जाते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखकर दोनों उठने लगे, आपने फ़रमाया अपनी-अपनी जगह रहो और फ़रमाया क्या तुम्हें उस चीज़ से बेहतर न बताऊँ जो तुमने सवाल किया है? अर्ज़ किया ज़रूर इरशाद फ़रमाइये।

इसपर आपने नमाज़ के बाद और सोते वक़्त ऊपर ज़िक्र हुई तसबीहात पढ़ने को बताई। (अल्-इसाबा)

हाफ़िज़ मुन्ज़री की किताब "अत्तरग़ीब वत्तरहीब" में यह भी है कि एक ग़ुलाम मिल जाने की आरज़ू ज़ाहिर करने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

तर्जुमाः ऐ फ़ातिमा! अल्लाह से डरो और अपने रब के फ़राईज़ अदा करती रहो और अपने शौहर के काम-काज में लगी रहो।

घर में सामान की कमी कोई ऐब नहीं

हज़रत सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा घर का काम-काज ख़ुद ही करती थीं, जैसा कि ऊपर ज़िक्र हुई हदीस से साबित हुआ। खाने-पीने की भी कमी रहती थी, घर में सामान बस बहुत ही मामूली था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बार देखा कि सय्यदा फ़ातिमा ने ज़ीनत के लिये उम्दा क़िस्म के कपड़े का पर्दा दरवाज़े पर लटका रखा है तो इस पर नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और इरशाद हुआ कि ये मेरे घर वाले हैं, मैं यह पसन्द नहीं करता कि अपने हिस्से की उम्दा चीज़ें इसी ज़िन्दगी के अन्दर खा लें। (मिश्कात)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़क्र (तंगदस्ती और ग़ुरबत) इख़्तियारी था। अपने घर वालों के लिये भी इसी को पसन्द फ़रमाते थे।

एक मर्तबा हज़रत सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे और अ़ली के पास सिर्फ़ मेंढे की एक खाल है जिस पर हम रात को सोते हैं और दिन को उसपर ऊँट को चारा खिलाते हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ मेरी बेटी! सब्र कर, क्योंकि मूसा (अ़लैहिस्सलाम) दस साल तक अपनी बीवी के साथ रहे और दोनों के पास सिर्फ़ एक अ़बा (जुब्ब, लम्बा कोट, जो पैरों तक आ जाए) थी।

उसी को ओढ़ते और उसी को बिछाते थे। (शरह मवाहिबे लदुन्निया)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अगर चाहते तो अपनी बेटी को एक गुलाम या बाँदी अ़ता फ़रमा देते, मगर आपने ज़रूरियात का एहसास फ़रमाया और आपकी खुदा-दाद रहमत और नरम-दिली ने इसी पर आपको आमादा किया कि सुफ़्फ़ा में रहने वाले मेरी बेटी से ज़्यादा ज़रूरत मन्द हैं। किसी न किसी तरह दुख-तकलीफ़ से मेहनत व मशक्क़त करते हुए बेटी की ज़िन्दगी गुज़र तो रही है मगर सुफ़्फ़ा वाले तो बहुत ही बुरे हाल में हैं, जिनको फ़ाक़ों पर फ़ाके गुज़र जाते हैं। उनकी रियायत पहले है, और बेटी को ऐसा अ़मल बताया जो आख़िरत में बेइन्तिहा अज्र व सवाब का ज़रिया बने, दुनिया की फ़ना होने वाली तकलीफ़ आख़िरत के बेइन्तिहा इनामों के मुक़ाबले में बहुत ही बे-हकीक़त है, इसी लिये आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर हज़रत सय्यदा फ़ातिमा से फ़रमाया कि अल्लाह से डरो और अपने शौहर का काम अन्जाम देती रहो, और अपने रब का फ़रीज़ा अदा करती रहो। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि मैं अल्लाह (की तक़दीर पर) और उसके रसूल (की तजवीज़) पर राज़ी हूँ। शायद डरने को इसलिये फ़रमाया कि दुनियावी आराम व राहत का सामान तलब करना उनके बुलन्द रुतबे के ख़िलाफ़ था। अल्लाह ही को ज़्यदा इल्म है।

हज़रत सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा दोनों जहान के बादशाह की सबसे प्यारी बेटी और जन्नत की तमाम औ़रतों की सरदार हैं। घर का काम-काज खुद करती थीं, हाँडी पकाना, झाड़ू देना, चक्की पीसना, मशक भरकर पानी लाना, उनका रोज़ाना का अ़मल था। मालूम हुआ कि अपने घर का काम-काज करना कोई ऐब की बात नहीं है।

आजकल की औ़रतें ख़ासकर जिनके शौहरों के पास चार पैसे हैं, घर के काम करने को ऐब समझती हैं, जिसकी वजह से नौकर-चाकर

रखने पड़ते हैं, और उन लोगों से बहुत-से दीनी व दुनियावी नुक़सान भी पहुँच जाते हैं। बहुत-से ख़ानदानों में मर्दों या नौजवान लड़कों को घर के अन्दर काम-काज पर मुलाज़िम रख लिया जाता है, घर की बहू-बेटियाँ सब उनके सामने आती हैं, और शर्म व हिजाब को बिल्कुल ताक़ पर उठाकर रख दिया जाता है, यह बड़ी बेदीनी की बात है। अपने घर का काम-काज खुद अन्जाम देने से सेहत भी अच्छी रहती है और काम भी मर्ज़ी से होता है।

ऊपर की रिवायतों से यह भी मालूम हुआ कि घर में सामान की कमी कोई ऐब और शर्म की बात नहीं है। इनसान की असल शराफ़त उसके अच्छे अख़्लाक़, उम्दा सिफ़ात, खुदा से डरने, इबादत की पाबन्दी और तक़्वे व पाकीज़गी की ज़िन्दगी है। उम्दा कपड़ों और बंगलों से या सोफ़ासेट और मेज़ कुर्सियों से, भड़कदार लिबास और सजे हुए कमरों से इनसान में कोई शराफ़त नहीं आ जाती। अगर कोई शख़्स पचास लाख के बंगले में रहता है और बद्-अख़्लाक़ी भी है तो उसमें कोई शराफ़त नहीं। किसी के चैम्बर में सोफ़ासेट है, दीवारें सजी हुई हैं, खुबसूरत पर्दे टंगे हुए हैं, मगर नमाज़ें ग़ारत की जाती हैं, ज़कातें नहीं दी जातीं तो यह कोई बड़ाई नहीं। ऊपर से अगर ये चीज़ें हराम माल से हों तो दोज़ख़ में ले जाने का ज़रिया बनेंगी। दोज़ख़ में सख़्त अज़ाब भी है और बहुत बड़ी ज़िल्लत भी। उस ज़िल्लत के मुक़ाबले में यहाँ के दुनियादारों के सामने नाक नीची करके रहना और शान व दबदबे से बाज़ रहना कोई बे-आबरूई नहीं है। समझदार वह है जो आख़िरत की फ़िक्र करे। फ़राइज़ पूरे करे और हराम से बचे। जो दोज़ख़ के काम करता हो वह कैसे बड़ा आदमी हो सकता है? बड़ा आदमी वह है जो अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी में लगा हो।

ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि

इस कलिमे की बहुत फ़ज़ीलत हदीसों में बयान हुई है। हज़रत

अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अब्दुल्लाह! क्या मैं तुमको ऐसा कलिमा न बताऊँ जो जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है? अर्ज़ किया ज़रूर इरशाद फ़रमाइये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह कलिमा **ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि** है। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया क्या तुमको जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा न बता दूँ? अर्ज़ किया वह क्या है? फ़रमाया वह **ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि** है। (तरग़ीब)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने **ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु वल्हम्दु लिल्लाहि व सुब्हानल्लाहि कसीरुन् व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि** कहा उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जायेगा अगरचे समुद्र के झागों के बराबर हों। (हाकिम)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बाक़ियात सालिहात (यानी ऐसी चीज़ें जो पूरी की पूरी ख़ैर हों और बाक़ी रहने वाली हों) की कसरत करो। अर्ज़ किया गया वे क्या हैं? फ़रमाया वे ये हैं: **अल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि**। (अहमद, निसाई)

एक हदीस में इरशाद है कि **ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि**। (अहमद व तरग़ीब)

अनेक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद नक़ल है कि **ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला**

बिल्लाहि निन्नानवे बीमारियों की दवा है जिनमें सबसे आसान ग़म है। (यानी ग़म की तो उसके सामने कोई हक़ीक़त ही नहीं)। (कंज़ुल-उम्माल)

फ़ायदा

आम रिवायतों में सिर्फ़ **ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि** ही बयान किया गया है अलबत्ता मुस्लिम शरीफ़ की बाज़ रिवायतों में **ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि** के साथ **अल्-अ़ज़ीज़िल् हकीम** भी नक़ल किया गया है। और क़ुरआन पाक के हिफ़्ज़ के लिए जो दुआ इमाम तिर्मिज़ी रह० ने नक़ल की है उसमें **अल्-अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम** का इज़ाफ़ा है।

फ़ायदा

ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि का मतलब यह है (जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है) कि गुनाहों से बचने का कोई ज़रिया नहीं, मगर अल्लाह की मदद के साथ। (कंज़ुल्-उम्माल)

तीन कलिमात जिनके पढ़ने का बेइन्तिहा सवाब है

हदीसः (9) उम्मुल् मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि एक दिन फ़जर की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे पास से सुबह ही सुबह बाहर तशरीफ़ ले गये। उस वक़्त मैं अपने मुसल्ले पर थी। फिर चाश्त का वक़्त हो जाने के बाद आप तशरीफ़ लाये। उस वक़्त मैं उसी नमाज़ की जगह बैठी हुई थी जहाँ आपने मुझे छोड़ा था। आपने मुझसे दरियाफ़्त फ़रमाया क्या तुम उस वक़्त से लेकर अब तक उसी हालत पर हो, जिस पर मैंने तुमको छोड़ा था? अ़र्ज़ किया जी हाँ! आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैंने तुमसे जुदा होने के बाद चार कलिमात तीन मर्तबा पढ़े हैं तुमने जिस क़द्र भी आज (लगातार दो-तीन घण्टे तक ज़िक्र किया है अगर इसके मुक़ाबले में उन कलिमात

को तौला जाये तो उन कलिमात का वज़न ज़्यादा हो जायेगा। (वे चार कलिमात ये हैं जिनको तीन मर्तबा पढ़ा) (1) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अ़-द-द ख़ल्क़िही (2) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही रिज़ा नफ़्सिही (3) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही वज़ि-न-त अ़रशिही (4) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही मिदा-द कलिमातिही। (मिश्कात शरीफ़ पेज 200)

हज़रत जुवैरिया रज़ि० कैसे उम्मुल मोमिनीन बन गईं

तशरीहः हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा हारिस बिन अबी ज़रार की बेटी थीं, जो पहले यहूदी थे बाद में इस्लाम क़बूल किया। शाबान सन् 5 हीजरी में बनू मुस्तलक़ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिहाद किया। उस लड़ाई में बनू मुस्तलक़ को हार हुई। उनके दस आदमी मारे गये और बहुत बड़ी तायदाद में मुसलमानों के हाथ क़ैदी आ गये। उन क़ैदियों में हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा भी थीं। जंग में जो क़ैदी हाथ आये इस्लाम के क़ानून के मुताबिक़ अमीरूल मोमिनीन की मर्ज़ी और राय पर उनको गुलाम और बाँदी बनाया जा सकता है। हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा चूँकि क़ैद होकर आयी थीं, इसलिये यह भी तक़सीम में आ गईं यानी हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अ़न्हु या उनके चचाज़ाद भाई को दे दी गईं। हज़रत जुवैरिया ने बाँदी बनकर रहना पसन्द न किया और अपने आक़ा से नौ औक़िया सोने पर किताबत का मामला कर लिया। एक औक़िया चालीस दिर्हम का होता है। किताबत इसको कहते हैं कि बाँदी और गुलाम का आक़ा से इस तरह मामला हो जाये कि मख़्सूस और मुतैयन रक़म आक़ा को अदा कर दे तो आज़ाद हो जाये।

हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने किताबत का मामला करके दरबारे रिसालत में हाज़री दी और अ़र्ज़ किया कि मैं सरदारे क़ौम हारिस बिन अबी ज़रार की बेटी हूँ और मैंने किताबत का मामला कर लिया है और मैं आप से मदद चाहती हूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हें इससे बेहतर राह न बता दूँ? अर्ज़ किया वह क्या? फ़रमाया कि तुम्हारी तरफ़ से मैं माल अदा कर दूँ और तुम से निकाह कर लूँ। अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे मन्ज़ूर है। चुनाँचे आपने उनकी तरफ़ से माल अदा फ़रमा दिया और इस तरह उनको आज़ाद कराकर उनसे निकाह फ़रमा लिया।

हज़राते सहाबा का बेमिसाल अदब

जब आपने उनसे निकाह फ़रमा लिया तो सारे मदीने में ख़बर गूंज गयी, उनकी क़ौम और ख़ानदान के सैकड़ों ग़ुलाम और बाँदी हज़राते सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के घरों में मौजूद थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस मुबारक निकाह की ख़बर फैलते ही हज़राते सहाबा किराम ने इस एहतिराम और अदब के पेशे नज़र कि अब तो यह नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ससुराल वाले हो गये, ये तमाम ग़ुलाम और बाँदी आज़ाद कर दिये।

हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने इस बारे में हुज़ूरे अक्दस सल्ल० से गुफ़्तगू भी न की थी, मुसलमानों ने ख़ुद ही मेरी क़ौम और ख़ानदान वालों को आज़ाद कर दिया जिसकी ख़बर मेरे चचा की लड़की ने मुझे दी। हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि मैंने कोई औरत ऐसी नहीं देखी जो जुवैरिया से बढ़कर अपनी क़ौम के लिये बड़ी बरकत वाली साबित हुई हो। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे निकाह किया तो इसकी वजह से बनू मुस्तलक़ के सौ घराने आज़ाद हो गये।

जब आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा को आज़ाद कराके उनसे अपना निकाह कर लिया तो हज़रत जुवैरिया के वालिद आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आये और अर्ज़ किया:

"मेरी बेटी इज़्ज़त वाली और सम्मान वाली है जिसे क़ैदी बनाकर

रखना गवारा नहीं है लिहाज़ा आप उसे छोड़ दीजिये"

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर मैं उसे इख़्तियार दूँ कि जी चाहे तो चली जाये और चाहे तो मेरे पास रहे तो इसको तुम अच्छा समझते हो? हारिस ने जवाब दिया जी हाँ! बहुत मुनासिब है। उसके बाद हारिस अपनी बेटी के पास आये और पूरा वाकिआ नकल किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तुझे इख़्तियार दिया है कि चाहे तो चली जाये, लिहाज़ा मेरे साथ चल। हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब में फ़रमायाः

"मैं अल्लाह और रसूलुल्लल्लाह को इख़्तियार करती हूँ तुम्हारे साथ न जाऊँगी।"

हज़रत जुवैरिया के बाप का मुसलमान होना

आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक मोजिज़ा (चमत्कार) देखकर हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के वालिद भी मुसलमान हो गये थे जिसकी तफ़सील यह है कि जंग के मौक़े पर जब बनू मुस्तलक़ को शिकस्त हो गयी और मुसलमानों ने उनको क़ैद कर लिया जिनमें हज़रत जुवैरिया भी थीं तो उस मौक़े पर उनके वालिद किसी तरह फ़रार हो गये और क़ैद होने से बच गये। बाद में अपनी बेटी को छुड़ाने के लिये मदीना मुनव्वरा का रुख़ किया और माल देकर छुड़ाने की नीयत से बहुत-से ऊँट साथ लेकर चले। चलते-चलते उन ऊँटों में से दो ऊँट दिल को बहुत ही ज़्यादा भा गये, जिन्हें अ़क़ीक़ की घाटियों में छुपाकर बाक़ी ऊँट लेकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हमारी बेटी आपकी क़ैद में आ गयी है लिहाज़ा उसके बदले ये ऊँट लेकर उसे छोड़ दीजिये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वे ऊँट कहाँ हैं जिनको तुम अ़क़ीक़ की घाटियों में छुपाकर आये हो? यह सुनते ही हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के वालिद ने कलिमा शाहदत पढ़ लिया और यह कहा कि वाक़ई आप

अल्लाह के रसूल हैं, उन दोनों ऊँटों के छुपाने का इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं था। जब आपने उनके मुताल्लिक़ ख़बर दी तो ज़रूर अल्लाह तआला ने आपको ख़बर दी है, उनके साथ उनके दो बेटों और क़ौम के बहुत-से लोगों ने इस्लाम क़बूल किया।

नाम बदलना

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नामुनासिब नामों को बदल दिया करते थे। हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा का नाम **बर्रह** था आपने बदलकर जुवैरिया रखा। (**बर्रह** नेक के मायने में है, इसको इसलिये तब्दील किया कि इससे ख़ुद अपनी तारीफ़ करना लाज़िम आता है और नेक होने का दावा ज़ाहिर होता है)। चूँकि इस किताब में हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की रिवायत पहली बार आयी है इसलिये हमने उनका तआ़रुफ़ (परिचय) करा दिया है, अगरचे बात लम्बी हो गयी मगर मुफ़ीद बहुत है। यह हालात किताब अल्-इसाबा और अल्-इस्तीआ़ब से लिए गये हैं।

यहाँ यह बात देखने की है कि एक यहूदी औ़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बा बरकत सोहबत में आते ही कैसी इबादत करने वाली और अल्लाह का ज़िक्र करने वाली बन गयी कि घण्टों मुसल्ले पर बैठी हुई अल्लाह से लौ लगा रही है। दर हक़ीक़त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम व तरबियत से मर्दों और औ़रतों में बन्दगी की शान उजागर हो जाती थी और ख़ालिक़ व मख़्लूक़ का रिश्ता बहुत मज़बूत हो जाता था। बन्दे अपने ख़ालिक़ को पहचानने लगते थे, और ख़ालिक़ के अहकाम को पूरा करने के लिये मर-मिटते थे और दिल में अपने ख़ालिक़ व मालिक की याद बसाते थे और ज़बान को भी उसकी याद में तर रखते थे। आज भी जो मर्द व औ़रत सुन्नत की पैरवी के ज़रिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नज़दीक हैं दिल व जान और ज़बान से ज़िक्रे

इलाही में लगे रहते हैं।

हदीस शरीफ़ से एक बात यह मालूम हुई कि अ़मल का ज़्यादा होना ही सवाब का ज़रिया नहीं है बल्कि बाज़ मर्तबा थोड़ा अ़मल भी बड़े अ़मल से बढ़ जाता है जिसका सवाब ज़्यादा मिल जाता है, चुनाँचे एक मर्तबा **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही** कहने का बहुत ज़्यादा सवाब है, फिर इस सवाब में बेइन्तिहा इज़ाफ़ा हो गया जबकि ये अलफ़ाज़ बढ़ा दिये:

अ़-द-द ख़ल्क़िही, रिज़ा नफ़्सिही, वज़ि-न-त अ़र्शिही, मिदा-द कलिमातिही।

हम्द व तसबीह ज़बान से एक मर्तबा निकली और उसकी मात्रा बढ़ाने के लिये ऊपर वाले अलफ़ाज़ बढ़ा दिये गये। सब मुसलमान माओं और बहनों से दरख़्वास्त है कि कम-से-कम सुबह शाम एक-एक तसबीह इन चीज़ों की इस तरह पढ़ा करें।

(1) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अ़-द-द ख़ल्क़िही

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ और उसकी तारीफ़ करती हूँ जिस क़द्र उसकी मख़्लूक़ है।

(2) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही रिज़ा नफ़्सिही

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ और उसकी तारीफ़ करती हूँ जिससे वह राज़ी हो जाएं।

(3) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही वज़ि-न-त अ़र्शिही

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ और उसकी तारीफ़ करती हूँ जिस क़द्र उसके अ़र्श का वज़न है।

(4) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही मिदा-द कलिमातिही।

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करती हूँ और उसकी तारीफ़ करती हूँ जिस क़द्र उसकी तारीफ़ के बेइन्तिहा कलिमात लिखने की रोशनाई हो।

अगर सुबह शाम न हो सके तो कम-से-कम एक तसबीह 24 घण्टे में तो ज़रूर पढ़ लिया करें, अल्लाह तआला अमल की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

कलिमा-ए-तौहीद के फ़ज़ाइल

हदीसः (10) हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने दस मर्तबा यूँ कहाः

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।

तर्जुमाः कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क है और उसी के लिये तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

तो उसको ऐसे चार गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा जो हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद से हों।

(मुस्लिम शरीफ़ पेज 344 जिल्द 2)

तशरीहः जब मुसलमान शरई जिहाद करते थे तो उनके पास बाँदी और गुलाम भी होते थे। अमीरुल् मोमिनीन जिहाद में शरीक होने वाले मुसलमानों पर उन काफ़िर क़ैदियों को बाँट देते थे जिनको क़ैद कर लिया जाता था। ये जिहाद करने वालों की मिल्कियत हो जाते थे। फिर उनमें से बहुत-से इस्लामी अख़्लाक़ और मुसलमानों के अच्छे आमाल से मुतास्सिर (प्रभावित) होकर इस्लाम क़बूल कर लेते थे। गुलाम आज़ाद करने की बड़ी फ़ज़ीलत हदीस शरीफ़ में आई है। एक हदीस में इरशाद है कि जब किसी ने मुसलमान गुलाम आज़ाद कर दिया अल्लाह तआला उसके हर-हर अंग को यानी आज़ाद करने वाले

के जिस्म के हर-हर हिस्से को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देंगे।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

बयान की गयी हदीस में फ़रमाया कि जिसने ऊपर ज़िक्र हुए कलिमे को (जिसे हम कलिमा-ए-तौहीद कहते हैं) दस बार पढ़ लिया तो उसको ऐसे चार गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा जो हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद से हों। एक आम गुलाम आज़ाद करने का सवाब ही इतना ज़्यादा है फिर हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद से गुलाम आज़ाद करने का सवाब और ज़्यादा बढ़ जाता है।

इस कलिमे को दस बार पढ़ना चाहें तो दो-तीन मिनट में पढ़ सकते हैं। ज़रा-सी देर के अमल पर इतना बड़ा सवाब इनायत फ़रमाना अल्लाह तआला का कितना बड़ा एहसान है।

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रात को (किसी वक़्त) इस हालत में जागे कि उसके मुँह से (ज़िक्र के) अलफ़ाज़ निकल रहे हों और उसने:

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर। अल्हम्दु लिल्लाहि व सुब्हानल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि रब्बिग़्फ़िर् ली

कहा, फिर **रब्बिग़्फ़िर् ली** कहा या फ़रमाया कि दुआ की तो उसकी दुआ क़बूल हो गयी। फिर अगर वुज़ू किया और (तहज्जुद की) नमाज़ पढ़ ली तो उसकी नमाज़ क़बूल कर ली जायेगी। (बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो शख़्स **ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व**

लहुल् हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर कहे जिससे उसका मक़सद सिर्फ़ अल्लाह पाक की रिज़ा हो तो अल्लाह तआ़ला उसको जन्नातुन्नईम में दाख़िल फ़रमायेगा। (तिबरानी)

इस कलिमे को कलिमा-ए-तौहीद और कलिमा-ए-चहारुम कहते हैं जैसा कि:

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर

को कलिमा-ए-तमजीद और कलिमा-ए-सोम कहते हैं। हदीसों में इनके पढ़ने की फ़ज़ीलतें बयान हुई हैं, और इनके नाम या नम्बर अ़वाम में मशहूर हो गये हैं और पहचान करने के लिये इस तरह नाम रखने में कोई हर्ज भी नहीं है।

कलिमा-ए-तौहीद को बहुत-से मौक़ों में पढ़ने की तरग़ीब दी गयी है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज के मौक़े पर जब सफ़ा-मरवा (पहाड़ियों) की **सई** (यह हज और उमरे का एक रुक्न है) फ़रमाई तो सफ़ा पर इस कलिमे को पढ़ा और इन लफ़्ज़ों का इज़ाफ़ा फ़रमाया:

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू अन्ज-ज़ वअ़्दहू व न-स-र अ़ब्दहू व ह-ज़मल् अहज़ा-ब वह्दहू

फिर सफ़ा से चलकर मरवा पर पहुँचे तो वहाँ भी वही अ़मल किया जो सफ़ा पर किया था। (मुस्लिम शरीफ़)

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि सबसे बेहतरीन दुआ़ अ़रफ़ा के दिन (यानी हज के मौक़े पर अरफ़ात) की दुआ़ है और सबसे बेहतरीन कलिमा जो मैंने और मुझसे पहले नबियों ने (इस मौक़े पर) कहा यह है:

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।

कलिमा-ए-तौहीद के ज़िक्र हुए अलफ़ाज़ के साथ दूसरी रिवायतों में **बियदिहिल् ख़ैरु** और **युह्यी व युमीतु** और **व हु-व हय्युल् ला यमूतु** का इज़ाफ़ा भी फ़रमाया है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने बाज़ार में यह कहाः

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व हय्युल् ला यमूतु बियदिहिल् ख़ैरु व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर

तर्जुमाः कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा वह तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क है और उसी के लिये सब तारीफ़ है, वही ज़िन्दा फ़रमाता है और वही मौत देता है और वह हमेशा ज़िन्दा है उसको मौत नहीं आयेगी, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

तो उसके लिये अल्लाह तआला दस लाख नेकियाँ लिख देंगे, और उसके दस लाख गुनाह माफ़ फ़रमा देंगे और उसके दस लाख दरजे बुलन्द फ़रमा देंगे और उसके लिये जन्नत में एक घर बना देंगे।

(तिर्मिज़ी व इब्ने माजा)

हज़रत अबदुर्रहमान बिन ग़नम रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि जो शख़्स मग़रिब और फ़जर की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपनी जगह से हटे बग़ैर (उसी तरह) टाँगें मोड़े हुए (जिस तरह अत्तहिय्यात पढ़ने के लिये बैठा है) दस बारः

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व हय्युल् ला यमूतु बियदिहिल् ख़ैरु व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर

पढ़ ले तो हर बार के बदले उसके लिये दस नेकियाँ लिख दी

जायेंगी और ये कलिमात हर तकलीफ़ से और शैतान मरदूद से उसके लिये हिफ़ाज़त की चीज़ बन जायेंगे और सिवाय शिर्क के कोई गुनाह उसको हलाक न कर सकेगा। और यह शख़्स सबसे अफ़ज़ल होगा, अलावा उसके कि कोई शख़्स इससे बढ़ जाये (यानी) इससे ज़्यादा कह ले जो इसने कहा। (मिश्कात)

बाज़ रिवायतों में है कि इन कलिमात को किसी से बात करने से पहले-पहले पढ़ ले और बाज़ रिवायतों में इन कलिमात को अस्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर पढ़ना भी आया है। (तरग़ीब)

हज़रत मुग़ीरा बिन शुअ़बा रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह पढ़ते थेः

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। अल्लाहुम्-म ला मानि-अ़ लिमा अअ़्तै-त व ला मुअ़्ति-य लिमा मनअ़्-त व ला यन्फ़अु ज़ल्जद्दि मिन्कल् जद्दु।

तर्जुमाः कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा, वह तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क और उसी के लिये तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह! तू जो कुछ अ़ता फ़रमाये उसका कोई रोकने वाला नहीं और जो कुछ तू रोक ले उसका कोई देने वाला नहीं। और किसी माल वाले को उसका माल तेरे फ़ैसले के मुक़ाबले में कोई नफ़ा नहीं दे सकता।

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद जो तसबीहात पढ़ने को बतायी हैं उनके पढ़ने के कई तरीक़े बयान किए गये हैं, उनमें से एक यह है कि 33 बार **सुब्हानल्लाहि** 33 बार **अल्हम्दु लिल्लाहि** 33 बार **अल्लाहु अकबर** कहे, इस तरह निन्नानवे (99) अ़दद हो जाते हैं और सौ (100) का अ़दद पूरा करने के लिए **ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला**

शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर एक बार पढ़ ले। (मिश्कात शरीफ़)

इस्तिग़फ़ार

अल्लाह के ज़िक्र में इस्तिग़फ़ार की भी बड़ी अहमियत है। अल्लाह तआ़ला से गुनाहों की मग़फ़िरत चाहने को इस्तिग़फ़ार कहते हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस्तिग़फ़ार का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाया किः

फ़-सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क वस्तग़फ़िर्हु इन्नहू का-न तव्वाबा

तर्जुमाः पस आप अपने रब की तसबीह और तारीफ़ बयान कीजिये और उससे मग़फ़िरत की दरख़्वास्त कीजिये, बेशक वह बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला है।

और आ़म मोमिनों को इस्तिग़फ़ार का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाया किः

व मा तुक़द्दिमू लि-अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ्-ज़-म अज्रा, वस्तग़फ़िरुल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम।

तर्जुमाः और जो नेक अ़मल अपने लिये आगे भेज दोगे उसको अल्लाह के पास पहुँचकर उससे अच्छा और सवाब में बड़ा पाओगे, और अल्लाह से गुनाह माफ़ कराते रहो, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि (जब) शैतान (मर्दूद हो गया तो उस) ने कहा कि ऐ रब! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम है मैं तेरे बन्दों को हमेशा बहकाता रहूँगा, जब तक उनकी रूहें उनके जिस्मों में रहेंगी। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मुझे क़सम

है अपनी इज़्ज़त व जलाल की और अपने बुलन्द मुक़ाम की जब तक वे मुझसे इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे मैं उनको बख़्शता रहूँगा। (अहमद)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो कोई:

अस्तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल् कय्यूमु व अतूबु इलैहि

कहे उसकी मग़फ़िरत कर दी जायेगी अगरचे मैदाने जिहाद से भागा हो। (मिश्कात शरीफ़)

एक हदीस में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया है कि जिसको यह पसन्द हो कि उसका आमालनामा उसको ख़ुश करे तो चाहिये कि ख़ूब ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करता रहे। (तरग़ीब)

मोमिन बन्दों को चाहिये कि दूसरे ज़िक्रों और विर्दों के साथ इस्तिग़फ़ार की कसरत को भी मामूल बनायें। कम-से-कम सुबह व शाम सौ-सौ बार तो इस्तिग़फ़ार पढ़ ही लिया करें। इसके अ़लावा जिस क़द्र मुमकिन हो इस्तिग़फ़ार की कसरत करें।

इस्तिग़फ़ार के अलफ़ाज़ अभी-अभी दो रिवायतों में गुज़र चुके हैं उनको इख़्तियार करें, और कुछ भी याद न होता हो तो **अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली** ही ख़ूब ज़्यादा पढ़ते रहें। इस्तिग़फ़ार के फ़ायदे तफ़सील के साथ किताब के आख़िर में आ रहे हैं, इन्शा-अल्लाह तआ़ला वहाँ बुज़ुर्गों से नक़ल किये गये इस्तिग़फ़ार के अलफ़ाज़ भी लिख दिये हैं।

नबी पाक पर दुरूद व सलाम के फ़ज़ाइल

ज़िक्रों में दुरूद शरीफ़ को भी बहुत अहमियत हासिल है। क़ुरआन मजीद में दुरूद व सलाम का हुक्म वारिद हुआ है और हदीसों में इसकी बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। हमने "दुरूद व सलाम के फ़ज़ाइल" के

उनवान से एक मुस्तक़िल रिसाला लिखा है, यहाँ मुख़्तसर तरीक़े पर चन्द हदीसें दर्ज करते हैं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जो शख़्स एक बार मुझपर दुरूद पढ़े अल्लाह तआला उसपर दस रहमतें नाज़िल फ़रमायेगा और उसके दस गुनाह माफ़ होंगे और उसके दस दर्जे बुलन्द कर दिये जायेंगे। (निसाई शरीफ़) और उसके लिये दस नेकियाँ लिख दी जायेंगी और उसको दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा। (तरग़ीब)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने मुझपर दुरूद पढ़ा और यूँ कहा:

अल्–मक़्अ़दल् मुक़र्र–ब अ़िन्द–क यौमल् क़ियामति अल्लाहुम्–म अन्ज़िल्हु

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! सय्यिदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ियामत के दिन अपने नज़दीक मुक़ाम में नाज़िल कीजियो।

तो उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) ज़रूरी होगी। (मिश्कात)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्ल० का इरशाद है कि अल्लाह के बहुत-से फ़रिश्ते ज़मीन में गश्त लगाते फिरते हैं और उनका का काम यह है कि मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुँचा देते हैं। (मिश्कात शरीफ़)

हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि एक दिन रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (सहाबा के मजमे में) इस हालत में तशरीफ़ लाये कि आपके मुबारक चेहरे पर ख़ुशी ज़ाहिर हो रही थी। (मजमे में पहुँचकर) फ़रमाया कि जिबराईल मेरे पास आये और उन्होंने बताया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ऐ मुहम्मद!

क्या तुमको यह बात खुश न करेगी कि तुम्हारी उम्मत में से जो शख़्स तुम पर दुरूद भेजेगा मैं उसपर दस रहमतें नाज़िल करूँगा। और जो शख़्स तुम्हारी उम्मत में से तुमपर सलाम भेजेगा तो मैं उसपर दस सलाम भेजूंगा। (मिश्कात शरीफ़)

इसलिए अगर कोई शख़्स हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजते हुए "दुरूद व सलाम" दोनों को मिला ले तो उसपर खुदा तआ़ला की बीस इनायतें होंगी।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर एक बार दुरूद शरीफ़ भेजेगा अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते उसपर सत्तर बार रहमत भेजेंगे। (मिश्कात शरीफ़)

मुल्ला अ़ली क़ारी रह० मिरक़ात शरहे मिश्कात में लिखते हैं कि मुमकिन है कि यह (यानी सत्तर रहमतें एक बार दुरूद के बदले में [illegible] जाना) जुमा के दिन के साथ ख़ास हो (इस दिन की बड़ाई व फ़ज़ीलत की वजह से सवाब बढ़ा दिया जाता हो और बजाय दस के सत्तर रहमतें नाज़िल होती हों। वल्लाहु अअ़्लम)।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि वह पूरा बख़ील और कन्जूस है जिसके सामने मेरा ज़िक्र हो और उसने मुझपर दुरूद न पढ़ा। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

एक हदीस में इरशाद है कि ज़ुल्म की बात है कि मैं किसी के सामने ज़िक्र किया जाऊँ और वह मुझपर दुरूद न भेजे।

(कंज़ुल् उम्माल)

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इरशाद फ़रमाया कि दुआ़ आसमान व ज़मीन के दरमियान लटकी रहती है, ज़रा भी आगे नहीं चढ़ती जब तक तू अपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर

दुरूद न भेजे। (तिर्मिज़ी)

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि हर दुआ अटकी रहती है जब तक तू अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद न भेजे। (कंज़ुल उम्माल)

इन रिवायतों से दुरूद शरीफ़ की चन्द फ़ज़ीलतें मालूम हुईं। मोमिन बन्दों को चाहिये कि दुरूद व सलाम की भी ख़ूब कसरत करें।

कोई मजलिस ज़िक्र और दुरूद व सलाम से ख़ाली न रहने दें

हदीसः (11) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो लोग किसी मजलिस में बैठे जिसमें उन्होंने अल्लाह का ज़िक्र न किया और अपने नबी पर दुरूद न भेजा तो यह मजलिस उनके लिये पूरी तरह नुक़सान होगी। अब अल्लाह चाहे तो उनको अज़ाब दे और चाहे तो उनको बख़्श दे। (मिश्कात शरीफ़ पेज 198)

तशरीहः मोमिन बन्दों को अल्लाह का ज़िक्र ख़ूब कसरत से करना चाहिये, कोई वक़्त ज़िक्र से ख़ाली न हो। क़ुरआन मजीद में इरशाद है:

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ، الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا، سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

तर्जुमाः इसमें कोई शक व शुब्हा नहीं कि आसमानों के और ज़मीनों के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने-जाने में दलीलें हैं अक़्ल वालों के लिये, जिनकी हालत यह है कि वे अल्लाह की याद करते हैं खड़े भी बैठे भी और लेटे भी, और आसमानों और ज़मीनों के पैदा होने में ग़ौर करते हैं कि ऐ हमारे

परवर्दिगार! आपने इसको बेकार और बेमक़सद नहीं पैदा किया, सो हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा दीजिये।

इस आयत में इरशाद है कि खड़े बैठे और लेटे अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते रहना चाहिये। बन्दे की यह बहुत बड़ी सआ़दत (नेक बख़्ती) है कि अपने रब का नाम ले और उसके ज़िक्र से अपनी ज़बान को तर रखे। पिछले पन्नों में ज़िक्र की फ़ज़ीलत, ज़िक्र के अलफ़ाज़ और ज़िक्र छोड़ देने की वईदें (डाँट डपट और सज़ा की धमकियाँ) तफ़सील के साथ गुज़र चुकी हैं। इस हदीस में इरशाद फ़रमाया है कि हर मजलिस में अल्लाह का ज़िक्र करें, और उसके नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजें। जो मजलिस इन दोनों चीज़ों से ख़ाली होगी वह नुक़सान का सबब होगी। पहले एक हदीस गुज़र चुकी है कि जो लोग किसी ऐसी मजलिस से खड़े हुए जिसमें अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया वह ऐसे है जैसे मुर्दा गधे की लाश के पास बैठे थे उसको छोड़कर उठ खड़े हों। और यह मजलिस उनके हक़ में अफ़सोस का सबब होगी। (अबू दाऊद) और एक हदीस में फ़रमाया है कि जन्नतियों को कोई हसरत (मलाल और अफ़सोस) न होगी सिवाय इसके कि कोई घड़ी दुनिया में अल्लाह के ज़िक्र के बग़ैर गुज़र गयी थी। (हिस्ने हसीन)

ऊपर की हदीस में सिर्फ़ मजलिस का ज़िक्र है और बाज़ रिवायतों में यह भी है कि जो शख़्स किसी जगह लेटा और उस लेटने की जगह उसने अल्लाह का ज़िक्र न किया तो यह लेटना अल्लाह की तरफ़ से उसके लिये सरासर नुक़सान है। और जो शख़्स किसी चलने की जगह में चला जिसमें उसने अल्लाह का ज़िक्र न किया, तो यह चलना उसके लिये अल्लाह की तरफ़ से सरासर नुक़सान होगा। (तरग़ीब व तरहीब)

मोमिन बन्दों को चाहिये कि जहाँ कहीं हों और जिस जगह भी बैठें या लेटें या चलें, चाहे थोड़ी ही देर का लेटना बैठना या चलना हो

कुछ न कुछ अल्लाह का ज़िक्र कर लिया करें।

मजलिस के आख़िर में उठने से पहले पढ़ने की दुआ

हदीसः (12) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मजलिस में बैठा फिर उसमें उसकी बेजा बातें बहुत हो गयीं और उसने उस मजलिस से उठने से पहले यह पढ़ लियाः

सुब्हानकल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क अशहदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़फ़िरु-क व अतूबु इलै-क

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ और उसकी तारीफ़ करता हूँ। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तुझसे गुनाहों की माफ़ी चाहता हूँ और तेरी बारगाह में तौबा करता हूँ।

तो जो कुछ उसने उस मजलिस में कहा है वह बख़्श दिया जायेगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ पेज 495)

तशरीहः यह हदीस हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से भी रिवायत की गयी है। अबू दाऊद शरीफ़ में हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मजलिस से खड़े होने का इरादा फ़रमाते थे तो सबसे आख़िर में यही ज़िक्र हुए अलफ़ाज़ पढ़ते थे। एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप ऐसे कलिमात पढ़ते हैं जो पहले नहीं पढ़े? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मजलिस में जो कुछ हुआ हो ये कलिमात उसके लिये कफ़्फ़ारा बन जाते हैं।

हाफ़िज़ मुन्ज़री रह० ने "तरग़ीब व तरहीब" में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से नक़ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी मजलिस में बैठते या नमाज़ पढ़कर फ़ारिग़ होते तो चन्द कलिमात अदा फ़रमाते थे, मैंने उन कलिमात के बारे में

सवाल किया तो इरशाद फ़रमाया कि (इन कलिमात के पढ़ने का फ़ायदा यह है कि मजलिस में) अगर ख़ैर की बातें की होंगी तो ये कलिमात उन बातों पर क़ियामत के दिन तक मोहर बन जायेंगे, और अगर बुरी बातें की होंगी तो उनके लिये कफ़्फ़ारा बन जायेंगे। ये कलिमात वही हैं जो ऊपर गुज़रे। (निसाई शरीफ़)

मजलिस से उठने से पहले इनको ज़रूर पढ़ लेना चाहिये और तीन बार पढ़ ले तो बेहतर है क्योंकि बाज़ रिवायतों में यह अ़दद (संख्या) ज़िक्र हुआ है। (जैसा कि तरग़ीब में है, और उसमें यह और बढ़ाया है **इग़फ़िर ली व तुब् अ़लय्-य**) ज़रा-सी ज़बान हिलाने में कितना बड़ा नफ़ा हासिल होता है।

और यह भी जान लेना चाहिए कि ये कलिमात पढ़ लेने से बन्दों के हक़ माफ़ न होंगे, जैसे किसी की ग़ीबत की या ग़ीबत सुनी, या चुग़ली खाई तो उसके लिये हक़ वाले से माफ़ी माँगे, और अगर उसको ख़बर न हुई हो तो उसके लिये इतना ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करे कि दिल गवाही दे दे कि उसके बारे में जो कुछ कहा था उसकी तलाफ़ी हो गयी। ख़ूब समझ लो।

तिलावत और ज़िक्र के बारे में चन्द अहकाम

हदीसः (13) हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पाख़ाने (शौचालय) से निकलकर (वुज़ू के बग़ैर ही) हमको क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाते थे और हमारे साथ गोश्त खा लेते थे और क़ुरआन मजीद (की तिलावत) से आपको ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने वाली हालत के अ़लावा कोई चीज़ रोकने वाली न थी।

हदीसः (14) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र (ताबिई रह०) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़मर बिन हज़्म रह० के लिये मज़मून तहरीर फ़रमाया, उसमें यह

बात (भी) थी कि कुरआन शरीफ़ को सिर्फ़ पाक आदमी ही छू सकता है। (मिश्कात शरीफ़ पेज 50)

हदीसः (15) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि उन घरों को (जिनके दरवाज़ों में मस्जिद से होकर गुज़रना पड़ता है) मस्जिद के रुख़ से फैर दो। (यानी दरवाज़ों का रुख़ बदल दो) क्योंकि मैं मस्जिद (के दाख़िल होने) को माहवारी के हाल वाली औरत के लिये और जिसपर गुस्ल फ़र्ज़ हो उसके लिए हलाल नहीं क़रार देता हूँ। (मिश्कात शरीफ़ पेज 50)

हदीसः (16) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हैज़ वाली औरत (जो माहवारी से हो) और जिसपर गुस्ल फ़र्ज़ हो (मर्द हो या औरत) कुछ भी कुरआन न पढ़े। (मिश्कात शरीफ़ पेज 49)

तशरीहः इन हदीसों में नापाक (जिसपर गुस्ल फ़र्ज़ हो) और हैज़ वाली औरत और बेवुज़ू के बाज़ शरई अहकाम बयान किये गये हैं। जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उसे 'जुनुब' कहते हैं, और औरत नमाज़ छूटने वाले दिनों में हो तो उसे 'हाइज़' (हैज़ वाली) कहते हैं। और जिसका वुज़ू न हो उसे 'मुहदिस' कहते हैं। इन तीनों के मुताल्लिक़ कुछ मसाइल हैं जो आगे दर्ज किये जाते हैं।

मसलाः 'जुनुब' और 'मुहदिस' नमाज़ नहीं पढ़ सकते। जब फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने का वक़्त आ जाये तो जुनुब पर गुस्ल करना और मुहदिस पर वुज़ू करना फ़र्ज़ हो जाता है।

मसलाः माहवारी वाली औरत पर नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ नहीं है, जब माहवारी के दिन ख़त्म हो जायें तो नमाज़ के लिये गुस्ल करना फ़र्ज़ हो जाता है। अगर माहवारी के दिन ख़त्म होने से पहले किसी वजह से गुस्ल कर लिया तो उस गुस्ल से पाक न होगी, और पाक औरत के

अहकाम उसपर जारी न होंगे।

मसला: मुहदिस मर्द हो या औरत कुरआन शरीफ़ नहीं छू सकते अलबत्ता हिफ़्ज़ (मुँह ज़बानी) कुरआन शरीफ़ पढ़ सकते हैं। जब कोई शख़्स पेशाब या पाख़ाना करने या और किसी वजह से बेवुज़ू हो जाये तो वह खाना भी खा सकता है और कुरआन शरीफ़ भी पढ़ सकता है और कलिमा व दुरूद शरीफ़ व इस्तिग़फ़ार भी पढ़ सकता है, अलबत्ता कुरआन शरीफ़ नहीं छू सकता। और न वुज़ू किये बग़ैर नमाज़ पढ़ सकता है, फ़र्ज़ नमाज़ हो या नफ़िल।

मसला: जुनुब (जिसपर गुस्ल फ़र्ज़ हो) और हाइज़ (माहवारी वाली औरत) को न कुरआन शरीफ़ पढ़ने की इजाज़त है न छूने की।

मसला: कुरआन शरीफ़ के अलावा पढ़ने की जो चीज़ें हैं जैसे पहला दूसरा तीसरा चौथा कलिमा और दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार को जुनुब और हाइज़ सब पढ़ सकते हैं, बल्कि अगर किसी आयत को दुआ के तौर पर जुनुब और हाइज़ पढ़ें तो उसके पढ़ने की भी इजाज़त है। जैसे **रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल्-आख़िरति ह-स-नतंव्-व किना अज़ाबन्नार** अलबत्ता बतौर तिलावत पढ़ने की इजाज़त नहीं।

मसला: जिस शख़्स पर गुस्ल फ़र्ज़ हो और जो औरत माहवारी से हो उसे मस्जिद में दाख़िल होना जायज़ नहीं है।

दस्तूरुल अमल

तिलावत और ज़िक्र और दुरूद व सलाम के फ़ज़ाइल मालूम हुए। अब हर शख़्स अपने दस्तूरुल अमल (एक कार्यक्रम) बना ले जिसपर अमल करता रहे। हम एक ऐसा दस्तूरुल अमल लिख रहे हैं जिसपर आसानी से हर शख़्स अमल कर सकता है।

सुबह व शाम

(1) सुबह को सूरः यासीन पढ़ें और उसके साथ फ़ुरसत के हिसाब से एक या दो पारे कुरआन पाक के पढ़ें।

(2) सुबह शाम सौ बार तीसरा कलिमा यानीः

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीम पढ़ें।

(3) सौ बार **अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल् कय्यूमु व अतूबु इलैहि** पढ़ें।

(4) सौ बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ें। (नमाज़ में जो दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं वह बेहतर है)।

(5) सौ बार **ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर।**

(6) **सय्यिदुल् इस्तिग़्फ़ार** एक बार।

(7) **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अ़-द-द ख़ल्क़िही** (तीन बार) **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही मिदा-द कलिमातिही** (तीन बार)।

अगर फ़जर की नमाज़ जमाअ़त के साथ (1) पढ़कर उसी जगह बैठे-बैठे ये चीज़ें पढ़ लें (जो थोड़ा-सा ही वक़्त होता है) तो आसानी से ये सब चीज़ें एक ही मजलिस में पढ़ी जा सकती हैं, और इनके पढ़ने के लिये बैठना इशराक़ की नमाज़ पढ़ने का भी ज़रिया बन जायेगा, और इस तरह से (इन चीज़ों के फ़ज़ाइल के अ़लावा) एक हज और एक उमरे का सवाब और ज़्यादा मिलेगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

शाम को अ़स्र के बाद इन चीज़ों को पढ़ लें। अ़स्र से मग़रिब

(1) औरतें तन्हा (बिना जमाअ़त के) नमाज़ पढ़ती हैं वे फ़जर पढ़कर उसी जगह बैठे-बैठे ज़िक्र करती रहेंगी और सूरज ऊँचा होने पर दो रकअ़त पढ़ लेंगी तो उनको भी इन्शा-अल्लाह तआ़ला बहुत ज़्यादा सवाब मिलेगा।

तक ज़िक्र करने की बहुत फ़ज़ीलत वारिद हुई है। उस वक़्त न हो सके तो मग़रिब के बाद पढ़ लें। उस वक़्त भी न हो सके तो इशा पढ़कर पढ़ लें। एक साथ न हो सके तो कुछ अ़स्र के बाद, कुछ मग़रिब के बाद, कुछ इशा के बाद पढ़ लें। बेकार की और फ़ुज़ूल बातों से बचने का फ़िक्र करेंगे तो बहुत वक़्त निकल आयेगा इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

रात को सूरः यासीन, सूरः वाक़िआ, सूरः मुल्क, सूरः अलिफ़ लाम मीम सज्दा पढ़ लें। कुछ भी न हो सके तो सूरः मुल्क (तबारकल्लज़ी) तो ज़रूर ही पढ़ लें।

सोते वक़्त

(1) सोने की दुआ **बिइस्मि-क अल्लाहुम्-म अमूतु व अह्या** पढ़ें।

(2) **सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि** 33, 33 बार, **अल्लाहु अकबर** 34 बार।

(3) सूरः ब-क़रः आख़िरी दो आयतें **आमनर्रसूलु** से सूरः के ख़त्म तक एक बार। **चारों कुल, सूरः फ़ातिहा** एक-एक बार। **आयतुल् कुर्सी** एक बार। **अस्तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु व अतूबु इलैहि** (तीन बार)।

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद

सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि 33, 33 बार, **अल्लाहु अकबर** 34 बार, **आयतुल् कुर्सी** एक बार, **चारों कुल** एक-एक बार।

यह मुख़्तसर-सा **दस्तूरुल अ़मल** नमाज़ के बाद का और सुबह शाम और रात का हमने लिख दिया है, इसके अ़लावा मुख़्तलिफ़ हालात की मसनून दुआओं की भी पाबन्दी करें जो इन्शा-अल्लाह आगे आ रही हैं। और इनके अ़लावा हर वक़्त अपनी ज़बान अल्लाह की याद में तर रखें।